Ok"k % 42(vad % 05 (ebZ % 2020(eY; % nl #Ik,

सीटू मजदूर

(ई–संस्करण)

सभी को मई दिवस 2020 की शुभकामनाऐं!

लेनिन के जन्म की 150वीं वर्षगाँठ

22 अप्रैल, 2020

सीटू की श्रद्धांजली

सीटू केन्द्र की पत्रिकाओं के लिए खबरें, रिपोर्टें, फोटो आदि कृपया इस मेल पर भेजें– *citujournals@gmail.com*

कामरेड लेनिन को 150वीं जयंती पर मजदूरों की श्रद्धांजलि

जे.एस. मजुमदार

22 अप्रैल 2020 को विश्व के मजदूर वर्ग के सबसे बड़े क्रांतिकारी नेता, व्लादिमीर इलिच लेनिन की 150वीं जयंती है *(दुनिया में उन्हें लेनिन के नाम से पुकारा जाता है)*।

उनके नेतृत्व में, 1917 में अक्टूबर क्रांति के माध्यम से, मजदूर वर्ग के नेतृत्व वाले एक राज्य की स्थापना 'सोवियत संघ' के रूप में की गयी, मानव समाज विकास के विश्व इतिहास में पहली बार एक समाजवादी राज्य बना था।

मार्क्स और एंगेल्स के बुनियादी कार्य को आगे बढ़ाते हुए, लेनिन ने बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में पूँजीवादी विकास के चरण को विश्लेषण किया; और अपने काम में इसे *'साम्राज्यवाद, पूँजीवाद का सबसे उच्चतम बिन्दु'* के रूप में उसको विश्लेषित किया; साम्राज्यवादी चरण में विश्व पूँजीवाद की सबसे कमजोर कड़ी को खोज लिया; अक्टूबर क्रांति के माध्यम से इस श्रृंखला को तोड़ा और मजदूर वर्ग के नेतृत्व में पहले राज्य की स्थापना की।

उनके नेतृत्व में, मजदूर वर्ग ने अन्य शोषित तबके, मानवता के लिए भोजन का उत्पादन करने वाले किसानों के साथ मजबूत गठबंधन के साथ अपनी पार्टी बनायी। यह मजबूत गठबंधन लाल झंडे में स्थायी रूप से उभरे हथौड़ा और दरांती प्रतीक के तौर पर क्रांतिकारी संदेश है। सीटू ने इस प्रतीक को मजदूर यूनियनों के वर्गोन्मुखीकरण और भारत में मजदूर वर्ग, किसान और अन्य मेहनतकश वर्गों की मुक्ति के लिए वर्ग–संघर्ष को बनाए रखने और सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद के लिए काम करने के लिए विरासत में लिया है।

नऐ उभरे समाजवादी राज्य को उसकी प्रारम्भिक अवस्था में ही साम्राज्यवादी देशों के सशस्त्र हमलों का सामना लेनिन के नेतृत्व में करना पड़ा; समाजवादी राज्य के तहत, मजदूर वर्ग मानव सामाजिक इतिहास में पहली बार समाजवादी निर्माण के लिए, मौजूदा और बदलती वास्तविकताओं में व्यावहारिक काम के रूप में और निरंतर वर्ग संघर्ष के हिस्से के रूप में; नागरिकों के लिए न्यूनतम मूलभूत जरुरतें – भोजन, स्वास्थ्य, आश्रय, शिक्षा और सामाजिक मनोरंजन आदि मुहैया कराने के लिए – और मानव श्रम द्वारा बनाए गए राष्ट्रीय धन के वितरण में मानव और वर्गों के बीच सामाजिक विषमताओं को दूर करने के लिए, इसके पुनर्वितरण के लिए ताकि उच्च मानव सामाजिक विकास के लिए मानव जीवन की गुणवत्ता का विकास करके मानव द्वारा मानव के शोषण को समाप्त करने वाले समाज का निर्माण किया जा सके।

पूँजीवादी व्यवस्था में बुर्जुआ लोकतंत्र में, जनता केवल संसदीय चुनावों में शामिल होती है ताकि संसद में सत्ताधारी और विपक्ष की भूमिका निभाने के लिए राजनीतिक दलों के उम्मीदवारों का चुनाव किया जा सके। जनता की अन्य कोई भूमिका नहीं है। मार्क्स और लेनिन ने हमें दिखाया है कि संक्षेप में, यह मुनाफे के लिए पूँजीवादी वर्ग के शासन को जारी रखना सुनिश्चित करता है, जबकि समाज उत्पादन, वितरण, प्रशासन में अपने नियमों के तहत काम करता है, इन नियमों का उल्लंघन करने के लिए दोषी को चिह्नित करता है और दर्दनाक सजा देता है।

लेनिन के नेतृत्व में समाजवादी राज्य ने लोकतंत्र के एक नए रूप की षुरुआत की, 'समाजवादी जनतंत्र', जो निर्णय लेने और लागू करने की प्रक्रिया में सभी वर्गों को शामिल करने वाला सहभागी लोकतंत्र और इसमें मुद्दे पर आधारित आलोचना और आत्मालोचना की समझ के साथ मौजूदा भौतिक स्थितियों में वैज्ञानिक चर्चा करके सही निर्णय पर पहुंचने और उनके कार्यान्वयन से आगे सीखने का सार है।

ट्रेड यूनियन जनवाद में भी सत्तारूढ़ और विपक्ष जैसा कुछ भी नहीं है। मजूदर संगठनों में, ट्रेड यूनियनों में समाजवादी लोकतंत्र के सिद्धांतों का अभ्यास किया जाता है। इसीलिए यह कहा जाता है कि ट्रेड यूनियन जनवाद ही समाजवादी जनवाद का सीखने का चरण है।

लेनिन के नेतृत्व में, अक्टूबर क्रांति ने मानव सामाजिक विकास के एक नए ऐतिहासिक युग में प्रवेश किया, जो आज की दुनिया में चार मुख्य मूलभूत सामाजिक विरोधाभासों और संघर्षों की विशेषता है। सोवियत संघ के विघटन और कई पूर्ववर्ती यूरोपीय समाजवादी देशों में धक्कों के बावजूद, पूँजीवाद और समाजवाद के बीच की विरोधाभास ही केन्द्रीय विरोधाभास है जो श्रम और पूँजी के बीच विरोधाभास और संघर्ष के साथ बना हुआ है, जो साम्राज्यवादियों और तीसरी दुनिया के देशों के बीच है और

साम्राज्यवादियों के बीच आंतरिक भी है, यूएसएसआर के विघटन के बाद विश्व मानव सामाजिक विकास में पिछले 40 वर्षों के दौरान भी साबित हुआ है कि इस युग में भी यही विरोधाभास मुख्य रूप में मान्य है।

लेनिन ने क्रांतिकारी चरणों की विशेषताओं को विश्लेषित किया; उस विशिष्ट चरण के दौरान बदलती वास्तविकताओं और घटनाओं के अनुसार पूरे विशिष्ट चरण के लिए कार्यनीति और 'रणनीति' तैयार की।

लेनिन, अवसरवाद, अराजकतावाद और वामपंथी उग्रवाद सहित सभी प्रकार के सुधारवाद और सहयोगवाद के खिलाफ दृढ़ता के साथ खड़े थे।

लेनिन ने जनता के बीच मजदूर वर्ग की पार्टी के काम को और वर्गों के बीच जनसंगठनों को अलग–अलग दृष्टिकोण, समझ और एजेंडे के साथ दोनों के बीच संबंधों को बनाने को प्रतिष्ठित किया।

लेनिन ने हमेशा एक क्रांतिकारी पार्टी के हर स्तर पर और इसके जनसंगठनों को केंद्र स्थापित करने के कार्य को प्राथमिकता देने पर जोर दिया।

लेनिन ने हमेशा प्रचार पर जोर दिया – कम्युनिस्ट प्रचार और पार्टी द्वारा राजनीतिक एजेंडे पर; और जन संगठनों द्वारा आंदोलन का प्रचार।

तीन वैश्विक घटनाओं – साम्राज्यवाद का आपसी प्रथम विश्व युद्ध के कारण हुई तबाही, रूस में मजदूर वर्ग के नेतृत्व में क्रांति ने पूँजीवादी दुनिया को हतोत्साहित किया, और औपनिवेशिक देशों में राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन को बढ़ाने के साथ–साथ मजदूर वर्ग संघर्ष की लहर; प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति पर 'वार्सा संधि के हिस्से के रुप में अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) के गठन का मार्ग प्रशस्त किया, जो दुनिया के श्रम, नियोक्ताओं और सरकारों का एकमात्र त्रिपक्षीय फोरम है।

आईएलओ संविधान राज्यों की प्रस्तावना,

1. ''सार्वभौमिक और स्थायी शांति केवल तभी स्थापित की जा सकती है जबकि यह सामाजिक न्याय पर आधारित हो;''
2. ''और जबकि श्रम की स्थितियाँ बड़ी संख्या में लोगों के साथ इस तरह के अन्याय, कठिनाई और अभावों को शामिल करती हैं, जिससे अशांति पैदा होती है कि दुनिया की शांति और सद्भाव को खतरे में डालती है'' और उन स्थितियों में सुधार की तत्काल आवश्यकता है;
3. जबकि श्रम की मानवीय परिस्थितियों को अपनाने में किसी भी राष्ट्र की विफलता अन्य देशों के रास्ते में एक बाधा है जो अपने देशों में स्थितियों में सुधार करने की इच्छा रखते हैं।

अक्टूबर क्रांति से पहले भी, लेनिन ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और मजदूर वर्ग की भागीदारी का अध्ययन किया था, इसके बावजूद कि उनके पास कोई आधुनिक ट्रेड यूनियन या मजदूर वर्ग की पार्टी नहीं थी। जब लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ..... *भारतीय लोकतांत्रिक तिलक पर ब्रिटिष गीदड़ों द्वारा सुनाई गई कुख्यात सजा. . . थैलीशाहों के चाकरों द्वारा एक लोकतंत्रवादी के खिलाफ इस बदले के जबाव में बॉम्बे में सड़कों पर प्रदर्शन और हड़ताल हुई थी। भारत में भी, सर्वहारा वर्ग पहले से ही सचेत राजनीतिक जन संघर्ष के लिए विकसित हो चुका है – और, इस मामले में, भारत में रूसी शैली का ब्रिटिश शासन बर्बाद है!''*

अक्टूबर क्रांति भी भारतीय मजदूर वर्ग को जल्दी से आधुनिक ट्रेड यूनियन बनाने और लाला लाजपत राय के नेतृत्व में भारतीय ट्रेड यूनियनों के अपने पहले केंद्र 'ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस' के रूप में स्थापना ने भारत के ट्रेड यूनियन आंदोलन और स्वतंत्रता आंदोलन को दिशा और गति प्रदान की।

अपने ट्रेड यूनियन केंद्र के गठन से प्रेरित मजदूर वर्ग के एकजुट संघर्श ने भी उनकी अपनी पार्टी – भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के गठन को जन्म दिया और राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के साथ ही साथ उसमें विद्यमान क्रांतिकारी आंदोलन की विभिन्न धाराओं के लिए, किसानों और अन्य तबकों के जन संगठनों के संघर्श के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिये।

मजूदर वर्ग के नेता और क्रांतिकारी कामरेड लेनिन की जयंती के 150वें वर्ष के इस अवसर पर, हम कामरेड लेनिन को श्रद्धांजलि देते हैं और भारत में मजदूर वर्ग के क्रांतिकारी आंदोलन में आगे बढ़ाने के लिए उनकी शिक्षाओं का पालन करने के लिए खुद को फिर से समर्पित करते हैं।

कामरेड लेनिन को लाल सलाम!

सम्पादकीय

सीटू मजदूर

सीआईटीयू का मुखपत्र

मई 2020

सम्पादक मण्डल

सम्पादक

~~के. हेमलता~~

कार्यकारी सम्पादक

~~जे. एस. मजुमदार~~

सदस्य

~~तपन सेन,~~

एम. एल. मलकोटिया,

कश्मीर सिंह ठाकुर,

पुष्पेन्द्र त्यागी,

एच.एस. राजपूत

अंदर के पृष्ठों पर

dkejM yfuu dk 150oh t;rh ij etnjk dh J)katfy &t-,l- etenkj 2

lhV & ebZ fnol ?kk"k.kki= 2020 5

ebZ fnol 2020% orZeku gkykr vkSj gekjs nkf;Ro &MCY;w-,Q-Vh-;w- 13

dUæh; VsM ;fu;uksa dk ebZ fnol 2020 eukus dk lq;Dr vkºoku 15

21 vÁSy vf[ky Hkkjrh; fojks/k fnol 18

dksfon&19 ds f[kykQ ykdMkmu ds nkSjku n'kHkj esa lhVw dk jkgr dk;Z 22

miHkkDrk eY; lwpdkad 26

कोविड लॉकडाउन के समृध्द सबक

dksfon&19 ds eqdkcys ds fy, tkjh y,dMkmu ds pyrs lhVw etnwj dk ebZ 2020 dk vad Hkh bZ&lLdj.k ds :i esa fudkyuk iM+ jgk gSA vuqHko g fd bl vf/kdre lkfFk;ksa rd igqapk;s] vkSj Q,joM+ djsA

gkykafd gekjh dksf'k'k gksxh fd ebZ ds igys lIrkg esa ge ,d ijd vad fudkyrs rkfd vuqd mi;ksxh [kcjksa vkSj tkudkfj;ksa dks vf/kdre yksxksa rd igqapk;k tk ldsA

ekpZ ds vfre lIrkg vkSj iwjs vçSy ekg lhVw ds gj Lrj ds dk;Zdrkvksa vkSj defZ;ksa y,dMkmu ds nkSjku cpko ds lkjs mik;ksa dk ikyu djrs gq, etnwj vkSj turk dh enn esa tqVs jgs rkfd bl chekjh ls eqdkcyk fd;k tk ldsA yk[kksa yksxksa dks ekLd ckW x,A dqN LFkkuksa ij LokLF; dfeZ;ksa dks futh lqj{kk midj.k ¼ihihbZ½ nh x;hA nS'k esa vyx&vyx txg f?kj x, çoklh etnwjksa dks mu jkT;ksa dh lhVw jkT; defZ;ksa vkSj ç'kklu ds tfj;s enn igqapkbZ x;hA yk[kksa çoklh etnwjksa rFkk vU; t:jrenksa dks n'k Hkj esa idk gqvk Hkkstu vkSj [kkus dk lkeku miyC/k djk;k x;kA

dk;Zdrkvksa rFkk lhVw bdkbZ;ksa us mu m|ksxksa ds ckjs esa tkudkjh bdëk dh tgk y,dMkmu dh xkbMykbUl dh vogsyuk djds etnwjksa dh uksdfj;k Nhuh tk jgh Fkh] mUgsa oru ls ofpr fd;k tk jgk FkkA oru vkSj uksdjh dh fgQktr ds fy, lcf/kr ljdkjh vf/kdkfj;ksa ds le{k ely mBk;s vkSj gy djkus dh dkf'k'ksa dh x;hA lhVw egklfpo us bu elyksa ij ljdkj dks Hkh fy[kk & ljdkj dks mudk lKku Hkh yuk iM+kA

21 vçSy dks lhVw us n'k0;kih çfrjks/k dk;Zokgh dk Hkh vk0gku fd;k & bles 25 gtkj ls T;knk LFkkuksa ij gbZ dk;Zokfg;ksa esa] y,dMkmu çkVksd,y dk ikyu djrs gq,] djhc <kbZ yk[k ls vf/kd etnwjksa us Hkkx fy;kA lhVw us 2020 ds ebZ fnol ds fnu Hkh blh rjg vf/kdre txgksa ij >.M+s Qgjkus dk vk0gku fd;k gSA ;g ,d u;k vuqHko gS &bllls lh[kus ij geus Hkfo"; ds fy, Hkh mi;ksxh enn feysxhA

bl ijh çfØ;k esa tYn ls tYn uhpsa rd viuk lUn'k igqapkus] vke etnwjksa rd mlls ys tkus esa lk'ky ehfM;k dh Hkwfedk e[kjrk ls lkeus vk;h gSA

मई दिवस 2020

सीटू – मई दिवस घोषणापत्र 2020

अंतर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग की एकजुटता के इस दिवस पर, मई दिवस 2020,

- एक सदी में मानवता को सबसे बुरी त्रासदियों में से एक – कोरोना वायरस महामारी के बीच में
- द्वितीय विष्व युद्ध के बाद से एक आसन्न आर्थिक संकट की ओर अग्रसर होने की भविश्यवाणी की गई,

सीटू

इनके द्वारा प्रदान की जा रही अमूल्य सेवाओं पर अपना हार्दिक आभार और वर्गीय गौरव व्यक्त करता है

- सभी फ्रंट लाइन स्वास्थ्य कामगार, डॉक्टर, नर्स, पैरामेडिकल स्टाफ, स्वच्छता कामगार और दुनिया भर के अन्य सभी कामगार, जो दूसरों के जीवन की रक्षा के लिए अपने जीवन को जोखिम में डाल रहे हैं।

इनके साथ एकजुटता व्यक्त करता है

- मजदूर वर्ग, जिसने आवष्यक सेवाओं – जल, बिजली, परिवहन, संचार, वित्तीय सेवाओं, दूध, किराने का सामान, सब्जियां, दवाइयाँ, इत्यादि को बनाए रखने के लिए दुनिया भर के देषों में लगाए गए लाकडाऊन के दौरान समाज के पहियों को चालू रखा। और व्यक्तिगत कठिनाइयों एवं कश्टों का मुकाबला करते हुए कई देषों में लॉकडाउन के तहत लाखों करोड़ों लोगों के जीवन की रक्षा की है।
- सभी किसानों और खेत मजदूरों को जो दुनिया को लगातार खिला रहे हैं
- और सभी मजदूरों एवं अन्य मेहनतकष तबके, गुप–चुप नायक और नायिकाएँ जो वास्तविक 'धन निर्माता हैं', दुनिया को आगे चलाने वाली अनदेखी ताकतें

सीटू

दुनिया भर में उन लाखों लोगों के परिवारों के साथ गहरा शोक व्यक्त करता है जिन्होंने कोविद–19 महामारी के दौर में अपने प्रियजनों को खो दिया

एकजुटता में खड़ा है, इन सभी के साथ

- उन सैकड़ों करोडों के साथ जो बीमारी से पीड़ित हैं और जिनको समाज के कई तबकों द्वारा कलंकित हैं, जबकि उनकी कोई गलती नहीं है, और
- कई अन्य सैकड़ों लाख लोग जो चिंता और भय में रहते हैं –
- चिंता और भय न केवल वायरस के बल्कि
- उन लोगों के भविश्य की चिंता जो पहले ही अपनी नौकरी और आजीविका के स्रोतों को खो चुके हैं
- कई और लोग जो अगर आज नहीं तो कल अपनी नौकरियों और आजीविका के स्रोत को खोने से डरते हैं,

इस मई दिवस पर,

सीटू

जोर देता है कि

- कोविद–19 महामारी के कारण वर्तमान संकट के साथ–साथ पहले से मौजूद वैश्विक आर्थिक संकट को दूर करने का एकमात्र तरीका मजदूरों और मेहनतकश जनता के सभी तबकों को एकजुट करना है;
- धर्म, जाति, क्षेत्र, जाति, नस्ल, भाषा, लिंग आदि के नाम पर उनके बीच बनाई गयी दीवारों को ध्वस्त करके एकजुट करना होगा;
- अपने जीवन, आजीविका और हमारे जीवन व आजीविका को बनाए रखने वाली पथ्वी और पर्यावरण की रक्षा के लिए मानव के रूप में एकजुट हों

कोविद–19 महामारी ने उस समाज की अमानवीय और बर्बर प्रकृति का पर्दाफास कर दिया है जो हम आज में जी रहे हैं अर्थात् पूँजीवादी व्यवस्था और उसका नवउदारवादी अवतार

इस बीसवीं सदी में नोबेल कोरोना वायरस, जो एक अदृश्य सूक्ष्म जीव है, ने मानवता के समक्ष चुनौती पेश की है, जिसका मुकाबला करने के वास्ते, पूरे विश्व के वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान, वित्तीय संसाधनों को जुटाकर, जीवन की रक्षा के लिए एक एकजुट लड़ाई की आवश्यकता है, अर्थात् हमारी पूरी मानवीय ताकत से लड़ो और इसे हराओ।

इसके बजाय, आज हम जो कुछ भी देख रहे हैं वह पूँजीवादी व्यवस्था का सबसे घिनौना और प्रतिकारक चेहरा है।

आज 22 लाख से अधिक लोग कोरोना वायरस से संक्रमित हैं, करोड़ों लोग जोखिम में हैं और पहले से ही दुनिया भर में डेढ़ लाख से अधिक लोग मर चुके हैं। कई देशों में तालाबंदी के कारण करोड़ों लोगों ने अपनी नौकरी और आमदनी खो दी है। वे बेघर हो गए हैं; वे और उनके परिवार भूखे रह रहे हैं। बड़े कॉरपोरेट और व्यवसाय महामारी की इस स्थिति का उपयोग करके, कर्मचारियों की छंटनी, उनके वेतन एवं बोनस में कटौती कर रहे हैं, काम के घंटे बढ़ा रहे हैं, और उन्हें उनके अधिकारों से वंचित कर रहे हैं। कॉरपोरेट के लिए अनुकूल ही नहीं बल्कि कॉरपोरेट के नेतृत्व वाली सरकारें जो कई देशों में शासन कर रही हैं, ने स्थिति का लाभ उठाते हुए मजदूरों के अधिकारों को कम करने के लिए श्रम कानूनों में बदलाव करके, नियोक्ताओं द्वारा श्रम कानूनों के अवैध उल्लंघन को वैध बनाने के लिए श्रम कानूनों को बदलकर और लोकतांत्रिक अधिकारों का दमन कर रही हैं। महामारी या कोई महामारी नहीं, पूँजीपतियों और उनके हितों का प्रतिनिधित्व करने वाली सरकारों के लिए धन का सृजन करने और समाज के पहिये को गतिमान रखने वाले मेहनतकश लोगों का जीवन और आजीविका कोई मायने नहीं रखती है, उनके लिए केवल पूँजीपति वर्ग का मुनाफा ही सब कुछ है। मुनाफा ही उनका ईश्वर है; राम या अल्लाह या जीसस नहीं। वे जनता को बांटने, उन्हें एक–दूसरे से लड़ाने के लिए लोगों की धार्मिक मान्यताओं का उपयोग करते हैं, लेकिन जब लोगों का शोषण करने, उनके अधिकारों पर हमला करने की बात आती है, तो सारे पूँजीवादी एकजुट हो जाते हैं और वे सभी मजदूरों का शोषण करते हैं और उन पर हमला करते हैं; इस मामले में कोई भेदभाव या पक्षपात नहीं।

अमेरिकी साम्राज्यवाद, दुनिया का सबसे शक्तिशाली देश का आज उजागर हुआ है। अपने आधिपत्य की आक्रामकता के सबसे क्रूर और बर्बर प्रदर्शन में, यह क्यूबा, वेनेजुएला और ईरान के खिलाफ अपने आर्थिक और राजनीतिक युद्ध को जारी रखता है। राष्ट्रों के विश्व समुदाय में लगभग अलग–थलग होने के बावजूद, यह फिलिस्तीनियों को मातृभूमि पर उनके अधिकार को अस्वीकार करने के लिए इजरायल का समर्थन करता है। यह क्यूबा से चिकित्सा सहायता के एकतरफा प्रस्तावों को स्वीकार करने से कई देशों को रोक रहा है, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय चिकित्सा एकजुटता का विस्तार करने का एक अनूठा रिकॉर्ड है। यह क्यूबा तक पहुँचने में किसी भी अंतर्राष्ट्रीय सहायता को भी रोक रहा है। समाजवादी क्यूबा, अमेरिका द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों का सामना करने के बावजूद, स्वास्थ्य सूचकांकों के साथ सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं को विकसित कर चुका है जो कई उन्नत पूँजीवादी देशों से आगे हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका ने ईरान पर अपने प्रतिबंधों को लागू करने के लिए किसी भी तरह की मदद को रोक दिया है,

जिसके परिणामस्वरूप कई रोके जा सकने वाली मौतें हो गई हैं। ट्रम्प ने कोरियाई युद्ध युग के रक्षा उत्पादन अधिनियम को भी लागू किया है जिसमें अमेरिकी क्षेत्रों को आपूर्ति करने के लिए अमेरिकी कंपनियों को मजबूर करने के लिए अतिरिक्त क्षेत्रीय अधिकार क्षेत्र है। जो और भी अधिक जघन्य है वह भारत और यहाँ तक कि यूरोपीय देशों सहित विभिन्न देशों के लिए जाने वाले खेपों को अपनी ओर मोड़ना और चोरी करना है। चीन से भारत में रैपिड टेस्ट किट के आने में देरी हो रही थी क्योंकि भारत के लिए खेप को अमेरिका की तरफ मोड़ दिया गया था। ट्रम्प ने भारत को 'प्रतिषोधात्मक कदमों' की चेतावनी दी कि अगर वह हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन के निर्यात पर प्रतिबंध नहीं हटाता है। जिसके बारे में वह मानता है कि इससे कोरोना वायरस की बीमारी का इलाज हो सकता है। जर्मनी, फ्रांस, कनाडा और ब्राजील और कुछ अन्य देशों ने अपने देशों को आने वाले फेस–मास्क, पीपीई और परीक्षण किट को रोकने के प्रयासों का आरोप अमेरिका पर लगाया है। यह आधुनिक समय की चोरी के अलावा और कुछ नहीं है।

और हाल ही में यूएसए ने चीन की पक्षधरता का आरोप लगाते हुए, विश्व स्वास्थ्य संगठन को आर्थिक मदद देना बंद कर दिया है, जो कोरोना महामारी से उत्पन्न होने वाली महत्वपूर्ण स्थिति से निपटने में दुनिया की मदद कर रहा है।

विश्व नेता के रूप में यूएसए की दावेदारी भी आज पूरी तरह से खोखला साबित हुई हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में अभूतपूर्व प्रगति के बावजूद भी यह अपनी नीतियों के कारण अपनी ही जनता की रक्षा करने में पूरी तरह से विफल रहा है। संयुक्त राज्य अमेरिका में स्वास्थ्य देखभाल निजी कंपनियों द्वारा मुनाफाखोरी के उद्देश्य से चलाई जाती है। यह कोरोना वायरस महामारी की तरह के सार्वजनिक आपातकाल से निपटने के लिए पूरी तरह से अपर्याप्त और अक्षम साबित हुआ है। निजी कॉरपोरेटस्, स्वास्थ्य क्षेत्र में इस तरह की स्थितियों में भी अपनी मुनाफाखोरी को छोड़ने को तैयार नहीं है। आमतौर पर भी, संयुक्त राज्य अमेरिका में निजी स्वास्थ्य देखभाल उन मजदूरों के बहुमत के लिए अप्रभावी है जिनके पास स्वास्थ्य बीमा नहीं है। सार्वजनिक अस्पतालों में भी अपने ही स्वास्थ्य देखभाल कर्मियों के लिए बेड, आईसीयू, वेंटिलेटर और व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण नहीं हैं। इसीलिए एक ओर अमीर बेहतर चिकित्सा सुविधाएं खरीद सकते हैं, तो दूसरी ओर गरीब हजारों की संख्या में मर जाते हैं। राष्ट्रपति ट्रम्प बीमारी के फैलाव को रोकने के लिए शुरुआती उपाय करने में विफल रहे। जनता के जीवन की तुलना में, अगले राष्ट्रपति चुनावों और अर्थव्यवस्था पर प्रतिबंधों के चलते खुद के चुनाव जीतने के उनके अवसरों के बोझ को अधिक माना है। इस प्रकार, आज यूएसए में संक्रमितों की सबसे बड़ी संख्या 7 लाख को पार और मौतों की सबसे बड़ी संख्या 36,000 को पार हुई है।

एक देश जिसके पास असंख्य मिसाइलें, लड़ाकू जेट, पनडुब्बी और भाड़े के सैनिक हैं जो दुनिया भर में किसी भी देष पर अपनी आर्थिक और राजनीतिक षर्तें थोपने के लिए तैयार रहता है, उसे अपनी जनता के स्वास्थ्य के लिए पर्याप्त संसाधनों का आवंटन करने की कोई परवाह नहीं है। वह अपनी जनता को अस्पताल के बेड, वेंटिलेटर आदि प्रदान करने में सक्षम नहीं है; वह अपने स्वयं के स्वास्थ्य कर्मचारियों को निजी सुरक्षा उपकरण और मास्क आदि प्रदान करने में सक्षम नहीं है। यह अन्य देशों के लिए इन वस्तुओं की खेप को चुराने का सहारा ले रहा है। उसी समय ट्रम्प ने इजारेदारों के लिए 500 अरब डालर, एयरलाइंस के लिए 29 अरब डॉलर और सुरक्षा कंपनियों के लिए 17 अरब डॉलर के पैकेज की घोषणा की है।

यही साम्राज्यवाद है, लेनिन ने इसे ही 'पूँजीवाद का उच्चतम स्तर' कहा था। जैसे–जैसे संकट बढ़ता है, वैसे–वैसे साम्राज्यवाद की सरगर्मी बढ़ती है, जिससे उसका सबसे अधिक घ्रणित और जघन्य पक्ष उजागर होता है।

नवउदारवादी पूँजीवाद के तहत, यहाँ तक कि कुछ उन्नत पूँजीवादी देशों, जिनमें यूके, इटली आदि की बेहतर सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालियां थीं, ने भी सार्वजनिक स्वास्थ्य, शिक्षा आदि सहित सामाजिक कल्याण पर खर्चों में कटौती की और निजीकरण को बढ़ावा दिया। यह 2008 के वैश्विक संकट के बाद उठाये गये मितव्ययी कदमों से और भी बदतर हो गया है। इसके परिणामस्वरुप अब इटली, स्पेन, ब्रिटेन, फ्रांस आदि में वर्तमान संकट की आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थता के रूप में स्पष्ट हो गया है और संकट का सामना करने के लिए स्पेन को निजी अस्पतालों का राष्ट्रीयकरण करना पड़ा है।

दुनिया अभी तक 2007–2008 के उस आर्थिक संकट से उबर नहीं पाई है, जबकि कोरोना वायरस की महामारी ने तो मार ही डाला है। अब यह व्यापक रूप से भविष्यवाणी की जा रही है कि विश्व अर्थव्यवस्था सबसे खराब ऐसे आर्थिक संकट में फिसल जाएगी जिसे दुनिया ने कभी नहीं देखा है। इससे साम्राज्यवादी देशों के बीच का बैर–भाव भी सामने आ गया है। ट्रम्प द्वारा कोरोना वायरस के

खिलाफ संभावित वैक्सीन विकसित करने वाली जर्मन कंपनी क्योरवैक को लुभाने के लिए अमेरिका आकर काम करने के लिए धन की पेशकश करने की सूचना मिली है। यह भी बताया गया कि जर्मन सरकार ने जर्मनी में ही रहने के लिए कम्पनी को लुभाने के लिए जबावी पेशकश की है। जर्मनी ने इटली को चिकित्सा उपकरण देने से इनकार कर दिया। इटली और स्पेन ने ग्रीस को निर्यात पर प्रतिबन्ध लगा दिया। कोरोना वायरस के कारण होने वाली सर्वाधिक मौतों के बाद भी जर्मनी और नीदरलैंड ने स्पेन, इटली और फ्रांस को मदद करने से इन्कार कर दिया है।

लेकिन जब मजदूरों के कठिन संघर्षों से जीते हुए अधिकारों, उनके वेतन, कल्याण आदि पर हमला करके पूँजीपतियों के मुनाफे की रक्षा करने की बात आती है, तो सभी पूँजीवादी देश ऐसी ही नीतियों को लागू करने में एकजुट हो जाते हैं।

'संकट से बाहर निकलने के लिए एकजुटता' का नारा वहाँ व्यर्थ है, जहाँ पूँजीपति सीधे तौर पर या परोक्ष रुप से शासन कर रहे हैं। यह तो केवल मजदूर और मजदूर वर्ग की सरकारें, समाजवादी देश ही हैं जिन्होंने हर जगह मेहनतकश जनता के साथ हमेशा एकजुटता को बढ़ाया है। इस सबसे खराब कोरोना महामारी के बीच भी एकता की तत्काल आवश्यकता है, और पूरे मेहनतकश वर्ग की एकता है, जो अत्याचारी शोषक प्रणाली जो मुनाफाखोरी के अतृप्त लालच के साथ मानव जीवन और आजीविका को छीनने में संकोच नहीं करता, से लड़ने के लिए एकजुट हो। संपूर्ण वैश्विक परिदृष्य आज उस स्थिति का संकेत देता है।

छोटे देश, समाजवादी क्यूबा ने साहस पूर्वक, अमेरिका के बाद दूसरे सबसे अधिक प्रभावित देश इटली में 60 डॉक्टरों को भेजा है, ताकि कोरोना वायरस से लड़ने में मदद मिल सके। जब संयुक्त राज्य अमेरिका सहित कई देशों ने एक ब्रिटेन के समुद्री जहाज पर सवार यात्रियों और चालक दल को कोरोना वायरस से संक्रमित होने का निदान होने पर अपने बन्दरगाहों पर ठहरने की अनुमति देने से इनकार कर दिया, तो यह क्यूबा ही था जिसने जहाज को अपने बंदरगाह में ठहरने की की अनुमति दी। और डब्ल्यूएचओ के दिशानिर्देशों का कड़ाई से पालन करते हुए 1,000 से अधिक यात्रियों और चालक दल के सदस्यों को जहाज छोड़ने में मदद की और उन्हें विशेष पुलिस के संरक्षण में बसों से हवाई अड्डे तक ले जाया गया और चार्टर्ड उड़ानों द्वारा सुरक्षित रूप से ब्रिटेन वापस ले जाया गया।

यही समाजवाद और पूँजीवाद के बीच सबसे विरोधाभासी रूप है, एक ओर मानवतावाद का तो दूसरी ओर हिंसक बर्बरता का उच्चतम रूप है।

दशकों लंबी आपराधिक अमेरिकी नाकेबंदी के कारण इसे होने वाली तमाम कठिनाइयों के बावजूद, क्यूबा ने जनता के लिए एक आदर्श सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली विकसित की है जो केवल एक मामूली से पंजीकरण शुल्क के साथ मुफ्त स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करती है। इसने उन्नत दवा उद्योग भी विकसित किया है। विषेशज्ञ डॉक्टरों सहित चिकित्सा टीमों को लैटिन अमेरिका, अफ्रीका आदि के कई जरूरतमंद देशों में नियमित रूप से क्यूबा द्वारा भेजा जाता है। इटली के अलावा, क्यूबा ने इस महामारी के दौरान वेनेजुएला और चार कैरिबियाई देशों में चिकित्सा दल भेजे हैं। क्यूबा में समाजवादी प्रणाली मुफ्त सार्वजनिक शिक्षा, भोजन, आवास आदि के सार्वजनिक प्रावधान प्रदान करती है।

चीन, जहाँ कोरोना वायरस के पहले मामले का पता चला था, इसके प्रसार को रोकने के लिए उसने अपने सभी संसाधनों को जुटाया। डब्ल्यूएचओ ने कहा कि 'यह इतिहास में बीमारी रोकथाम का सबसे महत्वाकांक्षी, चुस्त और आक्रामक प्रयास' था। चीन में मजबूत सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली के कारण यह संभव हो सका। '2020 तक सभी लोगों को कवर करते हुए एक सुलभ, न्यायसंगत, सस्ती और कुशल स्वास्थ्य प्रणाली' स्थापित करने की अपनी राजनीतिक प्रतिबद्धता के कारण, 2009 में स्वास्थ्य व्यय जीडीपी के 5% से बढ़कर 2017 में जीडीपी का 6.4% हो गया। अपनी जेब से खर्च में 29% तक की कमी आयी; 2017 में 82% रोगी देखभाल सार्वजनिक अस्पतालों में प्रदान की गयी। यह योजना और समाजवादी प्रणाली का परिणाम था जहाँ नियामक बल मुनाफा नहीं, बल्कि जनता है।

यह भी उल्लेखनीय है कि हर संकट और आपातकाल के दौरान, यह केवल सार्वजनिक क्षेत्र ही है जो ऐसे अवसरों पर उठ खड़ा होता है और राष्ट्र एवं जनता के बचाव में आगे आता है। यही 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के दौरान भी देखा गया था। यह सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक और वित्तीय संस्थान थे जो बचाव में आए थे; और यह सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियां और संस्थान ही हैं जिन्होंने राष्ट्रीय

अर्थव्यवस्था को निरंतर पूँजीगत व्यय के माध्यम से चलाऐ रखा है। यह सार्वजनिक क्षेत्र का फार्मास्युटिकल क्षेत्र था जिसमें फार्मास्युटिकल बहुराश्ट्रीय कंपनियों के दबदबे को नियंत्रण में रखा था और आजादी के बाद लंबे समय तक हमारी जनता को सस्ती दवाइयां मुहैया करायी गयीं। लेकिन नवउदारवादी नीति शासन ने दवाओं में इस आत्मनिर्भरता को बुरी तरह से मिटा दिया और सब कुछ लगभग बर्बाद कर दिया और/या फार्मास्युटिकल पीएसयू जैसे आईडीपीएल, हिंदुस्तान एंटीबायोटिक्स, बंगाल केमिकल एंड फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड इत्यादि कोकमजोर करके राष्ट्र एवं जनता लोगों के हितों पर कुठाराघात किया गया है। यह अभी भी देखने में आ रहा है। सार्वजनिक अस्पताल, सरकारी डॉक्टर, नर्स, पैरा मेडिकल स्टाफ, स्वच्छता कर्मचारी हैं, जो जीवन बचाने और वायरस को रोकने के लिए 24 घंटे काम कर रहे हैं। भारत सहित लगभग सभी पूँजीवादी देशों में, वे एक असमान युद्ध लड़ रहे हैं; वे बिना हथियार, बिना सुरक्षा उपकरण, बिना मास्क, दस्ताने आदि के भी सैनिकों की तरह लड़ रहे हैं, अपनी जान और अपने परिवार के सदस्यों को जोखिम में डाल रहे हैं। कई डॉक्टरों और नर्सों ने इस प्रक्रिया में अपना जीवन खो दिया है। कई स्थानों पर बड़े अस्पतालों को बंद करना पड़ा, जब डॉक्टर और नर्स संक्रमित हो गए, जिससे हजारों आम जनता को चिकित्सा से वंचित होना पड़ा। दूसरी ओर, निजी कॉरपोरेट अस्पताल परीक्षण, उपचार, बेड और सब कुछ के लिए अत्यधिक दरों पर शुल्क लगाने की स्थिति का उपयोग करते हैं, लेकिन साथ ही अपने कर्मचारियों को कम वेतन का भुगतान करके उनका शोषण करते हैं और उन्हें संगठित करने के अधिकार से भी वंचित करते हैं।

पूँजीवादी व्यवस्था यही है। न केवल स्वास्थ्य क्षेत्र में; बल्कि हर जगह यही रवैया है – शिक्षा, आवास, सामाजिक सुरक्षा, कार्य स्थल, श्रम अधिकार इत्यादि अर्थात् पूँजीपतियों के लिए मुनाफे, मजदूरों और मेहनतकश लोगों के लिए दुःख और अभाव; सरकारें ज्यादातर कॉरपोरेट और बड़े व्यवसायों के लिए ही काम कर रही हैं

भारत में भी ऐसा ही है। भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यय सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का लगभग 1% है। स्वास्थ्य प्रणाली सबसे अधिक निजीकरण में से एक है। और यह नवउदावादी काल की अवधि में चरणों में हुआ है। स्वास्थ्य पर कुल खर्च का लगभग 70% जेब खर्च पर आता है। सरकारी अस्पतालों में भर्ती करके केवल 44% बीमार देखभाल प्रदान की जाती है। भारत स्वास्थ्य पर्यटन को बढ़ावा देता है। जिसके तहत लोग बड़े कॉरपोरेट अस्पतालों में चिकित्सा के लिए दूसरे देशों से आ सकते हैं। साथ ही हमारे देश में गरीब डायरिया और तपेदिक जैसे हजारों रोके जा सकने वाले और इलाज योग्य बीमारियों से मर रहे हैं क्योंकि उन्हे उचित स्वास्थ्य देखभाल उपलब्ध नहीं है। नवउदारवादी नीतियों के तहत, सार्वजनिक अस्पतालों की उपेक्षा की जाती रही है और कुछ राज्यों में तो, यहाँ तक कि प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों का भी निजीकरण किया जा रहा है। स्वाभाविक रूप से हमारी सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली वर्तमान कोरोना महामारी की आवष्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ है। हमारे डॉक्टर, हमारी नर्सें, पैरा मेडिकल स्टाफ, आषा, स्वच्छता कार्यकर्ता और अन्य लोग अपनी जान जोखिम में डालकर न्यूनतम सुरक्षा के बिना काम करने के लिए मजबूर हैं। इस प्रक्रिया में कोरोना वायरस के कारण कई डॉक्टरों और नर्सों की मौत हो गई है।

बेशक, केरल एक अपवाद है। एलडीएफ सरकार ने आवश्यक उपायों की योजना तब भी बनाई है जब कोरोना वायरस रोग चीन तक सीमित था क्योंकि राज्य के कई छात्र चीन में अध्ययन कर रहे हैं। इसने परीक्षण, ट्रैकिंग, अलगाव, क्वैरन्टाईन आदि सहित सभी आवश्यक सावधानियां बरती हैं। एलडीएफ सरकारों ने राज्य में वर्षों से सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली विकसित की है, समाजवादी लक्ष्यों से प्रेरित होकर, जब भी वे सत्ता में होते हैं, इसे मजबूत करने के उपाय करते हैं।

यह शर्म की बात है कि ऐसी स्थिति में जब मजदूर वर्ग, विशेष रूप से असंगठित मजदूर नौकरी के नुकसान, वेतन और आमदनी में कमी से पीड़ित हैं, भाजपा सरकार कथित तौर पर श्रम कानून में बदलाव करना चाहती है ताकि उन्हें गुलामों की तरह के हालात में धकेला जा सके। मजदूर आज तिहरी मार झेल रहा है – पहले से मौजूद वैश्विक आर्थिक संकट, कोरोना वायरस रोग और पूरी तरह से अनियोजित तैयारी के साथ लॉकडाउन। गुजरात चौंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री ने कम से कम एक साल के लिए ट्रेड यूनियनों के गठन के प्रावधान को निलंबित करने, पीएफ और ईएसआई से संबंधित बकाया राशि के भुगतान को 90 दिनों की अवधि के लिए टालने और ठेका मजदूरों के वेतन में कटौती करके, मनरेगा मजदूरों के वेतन रु० 202 प्रतिदिन के बराबर करने की मांग की है। दक्षिणी भारत के नियोक्ता फेडरेशन ने काम के घंटे प्रतिदिन 12 घंटे करने और महंगाई भत्ते के संशोधन को निलंबित करने और श्रम कानून के उल्लंघन के लिए न्यूनतम दंडात्मक उपायों से छूट की माँग की है। भारत सरकार कथित तौर पर एक दिन में 12 घंटे

और सप्ताह में 72 घंटे बढ़ाने के लिए कारखाना अधिनियम में संशोधन करने की दिशा में आगे बढ़ रही है। गुजरात और मध्य प्रदेश की भाजपा सरकारों ने पहले ही इस मामले में अधिसूचना जारी कर दी है। मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार को भी एक अध्यादेश या कार्यकारी आदेश के माध्यम से अब श्रम पर संसदीय स्थायी समिति के साथ श्रम संहिता विधेयकों पर जोर देने की सूचना है। यह कुछ नहीं बल्कि सरकार द्वारा अपने बड़े कॉरपोरेट आकाओं और दानदाताओं को प्रसन्न करने के लिए बड़ी ढ़ीढ़ता और बेशर्मी से मजदूरों को पूरी तरह से गुलामों की तरह के हालात में लाकर उनसे संगठन के सामूहिक अधिकारों से वंचित करना है। ये सभी कदम कोरोना महामारी से उत्पन्न हालातों का अपने कॉरपोरेट आकाओं के हितों को बढ़ावा देने के लिए एक साधन बनाने के लिए हैं।

आरएसएस और देश में फैले उसके जाल का बदसूरत सांप्रदायिक चेहरा तब उजागर हुआ जब कोरोना वायरस की बीमारी जैसी मानव त्रासदी, जिसमें धर्मों, जातियों आदि के बीच कोई भेदभाव नहीं है, का इस्तेमाल सांप्रदायिक जहर फैलाने और मुसलमानों पर हमला करने के लिए किया गया है। सोशल मीडिया सहित मीडिया के आक्रामक दुरुपयोग के माध्यम से, समाज के सांप्रदायिक विशाक्तता को लगातार आरएसएस और उनके विभिन्न हिस्सों के द्वारा प्रशासन के समर्थन से बनाने की कोशिशें की जा रही है। यह इस तथ्य के बावजूद था कि लंदन में इस्कॉन सहित कई अन्य धर्मों द्वारा न केवल इस तरह के बड़े आयोजन किए गए, बल्कि भाजपा के नेताओं सहित कई राजनीतिक नेताओं ने भी जन्मदिन मनाने, शादियां और अन्य समारोहों में सैकड़ों शामिल थे, जिसमें लॉकडाउन के दिशानिर्देशों का उल्लंघन किया गया था, अपने स्वयं के स्वास्थ्य और दूसरों को खतरे में डाला गया था।

कोरोना वायरस ने पूँजीवादी व्यवस्था की बर्बर प्रकृति को उजागर किया है। इससे पहले मौजूद आर्थिक संकट ने आम लोगों की बुनियादी जरूरतों, रोजगार, सभ्य और गरिमापूर्ण जीवनयापन की स्थिति, षिक्षा, और सभी के लिए स्वास्थ्य प्रदान करने में असमर्थता को उजागर किया है। इसने अर्थव्यवस्था को लगातार विकसित करने में भी असमर्थता जताई है। व्यवस्था के निहित षोशक, विभाजनकारी, विघटनकारी और जहरीला चरित्र सभी के समक्ष नंगे रुप में आ गया है।

इसी समय, अपने सबसे अच्छे रूप में मजदूर वर्ग की एकजुटता भी इन संकटों के समय में प्रदर्शित हुई है। मजदूरों और मेहनतकश जनता, गरीब किसानों, खेत मजदूरों और कई प्रगतिशील तबकों ने लॉकडाउन की सबसे महत्वपूर्ण अवधि के दौरान बिना किसी बाधा के काम किया और बेहद पीड़ित मजदूरों और प्रवासी कामगारों को समर्थन दिया, जिन्होंने अपनी नौकरी और आमदनी को खो दिया था। अपने घरों से दूर, विभिन्न स्थानों में फंसे थे। वे देश भर के सभी राज्यों में ऐसे असहाय, बेरोजगार और आश्रयहीन मजदूरों और उनके परिवार के सदस्यों को भोजन, राहत और सभी प्रकार के नैतिक समर्थन सहित सभी प्रकार के समर्थन देने के लिए कई लाख लोगों तक पहुँच सके। सीटू को अपनी कमेटियों, कैडरों और कार्यकर्ताओं पर गर्व है, यहाँ तक कि उन लोगों पर भी, जो संगठनात्मक रूप से कमजोर क्षेत्रों में हैं, जिन्होंने लॉकडाउन अवधि के दौरान अपने संकटग्रस्त भाइयों और बहनों के समर्थन में वर्ग एकजुटता का प्रदर्षन करने की अपनी क्षमता से बाहर जाने का एक बड़ा काम किया।

पूँजीवादी लालच और शोषण और मजदूर वर्ग की एकजुटता और त्याग के बीच का अंतर अब हर किसी के लिए स्पष्ट है। यह वह समय है जब मजदूर वर्ग शब्दों की तुलना कर्मों से करता है। यह सभी मेहनतकश लोगों के लिए अपने स्वयं के अनुभवों के साथ नेताओं के भाषणों का मिलान करने का समय है; यह समझने के लिए कि उनके मुद्दे नीतियों के साथ जुड़े हुए हैं, कि ये नीतियाँ शोषक वर्ग की राजनीति से संचालित होती हैं।

नवउदारवादी पूँजीवादी क्रम के गहराते संकट के बीच, और उस पर कोरोना महामारी के आगे बढ़ने पर, शासक वर्ग अपनी मेहनतकश जनता के जीवन और आजीविका के अधिकारों पर अत्याधिक आक्रामक और क्रूर हो रहा है। पूँजीवादी शासकों के मुनाफाखोरी की लालसा के समक्ष मानव जीवन का मूल्य बहुत कम है। सतत संकट को शोषक वर्ग और सत्ता में उनके राजनीतिक एजेंटों द्वारा जनता के सभी अधिकारों पर थोप रहा है, साफतौर पर स्पष्टवादी इरादे के साथ और अधिक आक्रामक होकर विभाजनकारी और विघटनकारी नीतियों के साथ और अधिक फासीवाद की ओर मोड़ने में लगे हुए हैं। तथाकथित संकट प्रबंधन और अर्थव्यवस्था को धीमे संकट से बाहर लाने के नाम पर, पूंजीपति वर्ग सरकारी तंत्र के साथ मिलकर विभिन्न जन–विरोधी कदमों के माध्यम से जनता को अधिकाधिक निचोड़ने की कोषिष करेगा और कॉरपोरेट मीडिया द्वारा उन कदमों को फैलाने और न्यायोचित ठहराने की कोषिष करेंगे ताकि जनता को भ्रमित किया जा सके। अधिक षोशणकारी पुनर्गठन और मुनाफाखोर वर्ग के पक्ष में पुनर्गठन के लिए रोजगार और रोजगार–संबंधों को लक्षित किया जा रहा है। मजदूर वर्ग का आंदोलन इस तरह की कवायद को स्वीकार नहीं कर सकता।

- और इस तरह की स्थिति सीटू के 16वें सम्मेलन द्वारा स्पष्ट समझ की शुद्धता की पुष्टि करती है– ''मजदूर वर्ग का आंदोलन एक नए दौर में प्रवेश कर रहा है – एक अवहेलना और प्रतिरोध''। मई दिवस 2020 को पूरे वर्ग को एकजुट करते हुए, दोनों संघर्षों के लिए, संगठनात्मक और वैचारिक रूप से खुद को तैयार करने की प्रतिज्ञा के साथ मनाया जाए।
- कामकाजी जनता के लिए यह समय है कि शासन में अपने एजेंटों के माध्यम से पूँजीवादी व्यवस्था की इस नापाक विनाशकारी योजना का पर्दाफास कर डाले।
- यह समय हमारे लिए यह पहचानने का है कि कौन किसके लिए खड़ा है; किसके लिए, किसके सहारे और किसके खिलाफ लड़ना है। यह आज सभी अधिक जरूरी और आवश्यक है। वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ ट्रेड यूनियन्स के महासचिव जॉर्ज माव्रिकोस ने कहा, दैनिक समस्याओं के खिलाफ हमारा संघर्ष न्यायसंगत है। मजदूर वर्ग की सामाजिक मुक्ति के लिए हमारा संघर्ष भी आवश्यक है। सभी मजदूरों को एक साथ लेकर हम यह कर सकते हैं''।
- मजदूर वर्ग और वर्गोन्मुख मजदूर वर्ग आन्दोलन के अगुआ वर्ग को यह सुनिश्चित करने के लिए लगातार और निरंतर प्रयास करने पड़ते हैं कि क्रूर व्यवस्था की नग्नता, उसकी अमानवीय साजिशों और उसे बढ़ावा देने वाली संदिग्ध राजनीति पूरी तरह से मेहनतकश जनता की चेतना तक पहुँचे।
- इस वर्ष मई दिवस, जो कॉमरेड लेनिन की 150 वीं जयंती के साथ आया है, इस कार्य को सही तरीके से पूरा करने के लिए वर्गोन्मुख मजदूर वर्ग के आंदोलन में शामिल करना है।

इस प्रकार, इस मई दिवस पर,

सीटू

दुनिया भर में और भारत में भी सभी मजदूरों और मेहनतकश जनता से अपील करता है –

- वायरस से लड़ने, सुरक्षित रहने और अपने स्वास्थ्य की रक्षा करने के लिए एकजुट हों
- पूँजीपतियों और सरकारों के हमलों और चालबाजियों से लड़ने के लिए एकजुट हों, जो वायरस द्वारा बढ़े हुए आर्थिक संकट के बोझ को पूरी तरह से मजदूर वर्ग पर थोपने की कोशिशों में है।
- मजदूर वर्ग और मेहनतकश जनता द्वारा उत्पन्न बड़े कारपोरेटों के मुनाफे और धन की रक्षा करते हुए, मजदूरों को मुफलिसी में धकेलने के लिए और उन्हें उनकी मेहनत से मिले अधिकारों से वंचित करने के प्रयासों का मुकाबला करने के वास्ते एकजुट होने का प्रयास करें।
- मजदूर वर्ग की एकता और सभी मेहनतकशों की एकता को बाधित करने और उन्हें धर्म, क्षेत्र, नस्ल, जाति, जातीयता और लिंग के आधार पर विभाजित करने के सभी प्रयासों को विफल करने के लिए एकजुट हों और लड़ें

मई दिवस जिन्दाबाद!

मजदूर वर्ग की एकजुटता जिन्दाबाद!

मजदूर–किसान एकजुटता जिन्दाबाद!

समाजवाद जिन्दाबाद!

पूँजीवाद का नाश हो!

मई दिवस 2020 का अवलोकन

सीटू के आह्वान पर, 21 अप्रैल 2020 को कोविद–19 से लड़ने के लिए लॉकडाउन के सभी दिशानिर्देशों का पालन करते हुए, बेहद सफल देशव्यापी अनूठे विरोध कार्रवाई के लिए मजदूरों और अन्य मेहनतकश तबकों को बधाई देते हुए, सीटू ने अपनी सभी इकाइयों, यूनियनों और मजदूरों को लॉकडाउन के सभी दिशानिर्देशों का पालन करते हुए, संभवतः अधिकाधिक स्थानों पर अपना लाल झंडा फहराकर मई दिवस 2020 को मनाने के लिए कहा है।

21 अप्रैल के अपने परिपत्र में सीटू का कहना है –

''आज की ही तरह से, 1 मई को सुबह 8 बजे सीटू के झंडे उठाए लहराये जाने चाहिए – जहाँ भी संभव हो, घरों, कॉलोनियों, कार्यालयों, कार्यस्थलों पर जो खुले हों आदि।

''आज की ही तरह से, लेकिन यहाँ तक कि अधिक स्थानों पर, हमें प्रतिज्ञा लेने के लिए सभी सावधानियों और दिशानिर्देशों और भौतिक दूरी का पालन करते हुए फिर से इकट्ठा होना चाहिए। हमें मजदूरों और जनता के अधिकारों पर हमलों के खिलाफ लड़ने के लिए प्रतिज्ञा करनी चाहिए, जिसमें आठ घंटे का कार्य दिवस भी शामिल है, जिसकी लड़ाई के लिए ''मई दिवस'' एक प्रतीक है।''

मई दिवस 2020 की शपथ

:इस मई दिवस 2020 पर:

हम, मजदूर और मेहनतकश लोग प्रतिज्ञा करते हैं-

- कोरोना वायरस से लड़ने, सुरक्षित रहने और अपने स्वास्थ्य की रक्षा करने के लिए एकजुट हैं।
- आठ घंटे के कार्य दिवस के अधिकार की रक्षा में लड़ने के लिए एकजुट हैं, जो पहले से ही हमले की जद में है।
- वायरस के चलते बढ़े हुए आर्थिक संकट के बोझ को पूरी तरह से मजदूर वर्ग पर डालने की, पूँजीपतियों और उनका प्रतिनिधित्व करने वाली सरकारों की तिकड़मों और साजिशों से लड़ने के लिए, एकजुट हैं।
- मजदूरों और मेहनतकश जनता द्वारा उत्पन्न बड़े कॉर्पोरेट्स के मुनाफे और धन की रक्षा करने के लिए, उन्हें उनकी मेहनत से मिले अधिकारों से वंचित करने के, पूंजीपतियों और उनका प्रतिनिधित्व करने वाली सरकारों के घृणित प्रयासों से लड़ने के लिए, एकजुट हैं।
- मजदूर वर्ग की एकता और सभी मेहनतकशों की एकजुटता को बाधित करने और उन्हें धर्म, क्षेत्र, नस्ल, जाति, जातीयता और लिंग के आधार पर विभाजित करने के सभी प्रयासों को विफल करने की लड़ाई के वास्ते एकजुट हैं।
- दुनिया के मजदूरों और जनता पर, अपना आधिपत्य स्थापित करने और अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय पूँजी के आदेशों को थोपने के साम्राज्यवाद के हमलों से लड़ने और उसे हराने के लिए एकजुट हैं।
- शोषणकारी पूंजीवादी व्यवस्था के खात्मे के लिए संघर्ष को एकजुट करने और नए शोषण मुक्त समाज, सामाजिक समाज में प्रवेश करने के लिए एकजुट हों

मई दिवस जिन्दाबाद!

मजदूर वर्ग की एकजुटता जिन्दाबाद!

मजदूर-किसान एकजुटता जिन्दाबाद!

समाजवाद जिन्दाबाद!

पूँजीवाद का नाश हो!

मई दिवस 2020: वर्तमान हालात और हमारे दायित्व

वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ ट्रेड यूनियन्स, मई दिवस 2020 के अवसर पर, **सभी महाद्वीपों के मजदूरों को सलाम** पेश करता है; उन सभी को जिनका काम मुश्किल परिस्थितियों जैसे कि कोरोनावायरस महामारी, में भी जीवन की गति को आगे बढ़ाता है और सभी आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन करता रहता है ताकि जीवन जारी रह सके और मजदूर की जरूरतों को पूरा किया जा सके और लोकप्रिय स्तर को हासिल किया जा सके।

हम दुनिया भर में सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालियों के लाखों कर्मचारियों का सम्मान करते हैं: डॉक्टरों, नर्सों, सहित सभी स्वास्थ्य कर्मचारियों, जो कोरोनोवायरस महामारी के दौरान हर दिन महामारी से रोगियों को बचाने के लिए आवश्यक सुरक्षात्मक और चिकित्सा उपकरण नहीं होने के बावजूद स्वयं के स्वास्थ्य और जीवन को जोखिम में डालते हैं। वे अपने साहस और खुद की अनदेखी करते हुए, महामारी के दौरान, जो पहले से ही लाखों मामलों और सैकड़ों–हजारों मौतों की वजह है, इस संघर्ष के मोर्चे पर देखभाल और उपचार का बोझ उठा रहे हैं। सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा सेवा प्रणाली को जानबूझकर कमजोर करने के इरादे से उसके वित्तपोषण में कटौतियां करते जाने के साथ ही साथ बहुराष्ट्रीय कंपनियों की सट्टेबाज मुनाफाखोरी को बढ़ावा देने के लिए उसके मुख्य तंत्र का निजीकरण की नीतियों पर सभी पूँजीवादी सरकारें चलते हुए सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था को बदनाम कर चुकी हैं।

हम मजदूर और आम जनता के सभी तबके, जुझारु स्वास्थ्य कर्मियों के साथ अपनी आवाज को एकजुट करते हैं, हम उनके संघर्ष के साथ एकजुटता में खड़े हैं और हम रिक्तियों को तत्काल पूरा करने, सार्वजनिक स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे की पर्याप्तता और जनता की स्थायी व अस्थायी जरूरतों की सामग्री की पूर्ति के लिए माँग करते हैं। निजी क्षेत्र का अधिग्रहण और स्वास्थ्य एवं कल्याण के व्यावसायीकरण और निजीकरण का उन्मूलन। मुफ्त सार्वजनिक सार्वभौमिक और उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएं। **मुनाफे के बजाय मजदूरों का स्वास्थ्य!**

हम सुपरमार्केट में, फार्मास्युटिकल क्षेत्र में, सफाई सेवाओं में, ऊर्जा क्षेत्र और अन्य सेवाओं में, खाद्य और बुनियादी आवश्यकताओं के उत्पादन और वितरण में लगे मजदूरों को सलाम करते हैं, जो अपने काम के माध्यम से मजदूरों और जनता के अस्तित्व के लिए आवश्यक हर चीज को सुनिश्चित करते हैं।

साथ ही साथ, कोरोनावायरस महामारी के परिणामों के अवसर पर, **हम छंटनी, भुगतान की कमी, अघोषित कार्य और ट्रेड यूनियन स्वतंत्रता के प्रतिबंध के माध्यम से मजदूरों के श्रम अधिकारों पर भारी हमले की निंदा करते हैं।**

लंबे समय तक बेरोजगार, अशिक्षित मजदूर, आप्रवासी, षरणार्थी, जो अन्य बीमारियों से पीड़ित हैं, जिन्हे पूरी तरह से उनके भाग्य पर छोड़ दिया गया है, जीवित रहने में या अपने स्वास्थ्य की आवष्यक देखभाल सुनिश्चित करने असक्षम होना, जो इसकी गिरावट का कारण बन सकता है।

दुनिया भर में उन कंपनियों के कर्मचारियों के द्वारा शिकायतें व्यक्त की जाती हैं जो बुनियादी आवश्यकताओं का उत्पादन नहीं करती हैं, लेकिन आवश्यक सुरक्षा उपायों के अनुपालन के बिना, अपने कर्मचारियों से उत्पादन लाइनों और कार्यालयों में काम लेना जारी रखती हैं, ताकि बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपने मुनाफों में वृद्धि कर सकें; परिणामस्वरूप, महामारी तेजी से फैलती है, जैसा कि उत्तरी इटली में, अमेरिका, तुर्की और अन्य जगहों पर हुआ है।

इन सभी मुद्दों का सामना करते हुए, हम मजबूत और सक्रिय रहे हैं, हमने अपनी जुझारु माँगों, सभी के लिए मुफ्त और सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा की मजदूरों माँगें, सभ्य वेतन वाली नौकरियों के लिए, सभी बेरोजगारों के लिए पूर्ण रोजगार का अधिकार, जो काम करने में असमर्थ हैं या कोरोनोवायरस या अन्य बीमारियों से पीड़ित हैं, को पर्याप्त समर्थन को आगे रखा है। इस महामारी के दौरान हुई सभी छंटनी और प्रतिकूल बदलावों को वापस लें!

इसी समय, पूँजीवादी देशों और साम्राज्यवादी शक्तियों का वैर–भाव, प्राकृतिक एवं उत्पादित धन की चोरी कर रही है और खूनी संघर्ष और युद्ध के लिए अग्रणी बनी हुई है, इन स्थितियों में भी अपने आर्थिक हितों की रक्षा के लिए मजदूरों की जरूरतों के खिलाफ उन्मत्त

प्रयास जारी हैं। क्यूबा, वेनेजुएला और ईरान की जनता के खिलाफ अमेरिकी आर्थिक प्रतिबंध, सीरिया, फिलिस्तीन, यमन के खिलाफ साम्राज्यवादी हस्तक्षेप, हथियार उत्पादन तथा व्यापार, संघर्ष और दुश्मनी जारी है।

कोरोनोवायरस के खिलाफ स्वच्छता और आवश्यक सामग्री में सट्टेबाजी, एक वैक्सीन खोजने की प्रतियोगिता जो संबंधित कंपनियों और उसके देश में को भारी मुनाफा लाएगी को तेज कर दिया है।

पूँजीवादी वैर–भाव और सट्टेबाजी के खिलाफ, मजदूरों और जनता ने हमारी एकजुटता और सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयता को बढ़ाया है, मिसाल है क्यूबा, जिसने महामारी से प्रभावित चौदह देशों में विशेषज्ञ डॉक्टरों को भेजा है, इटली के मजदूरों का उदाहरण जिन्होंने डॉक्टरों और मजदूरों के समर्थन में एक आम हड़ताल का आयोजन किया। सभी देशों में मजदूरों के उदाहरण, जो चुप नहीं रहे हैं, जो इस संकट के दौरान भी जनता के साथ एकजुटता के जुझारु नारों के साथ मुकाबला कर रहे हैं।

शिकागो में प्रवासी मजदूरों, जिन्होंने 8 घंटे के कार्य दिवस की स्थापना के लिए मई 1886 में संघर्ष किया और बलिदान किया, अपने अधिकारों के निरंतर दावे के लिए वैश्विक मजदूर वर्ग का मार्ग प्रशस्त किया।

डब्ल्यू.एफ.टी.यू. की तर्ज पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वर्गोन्मुख मजदूर आंदोलन, उनके संघर्ष की विरासत का सम्मान करता है और किसी भी परिस्थिति में कठिनाइयों के बावजूद, मजदूरों की आधुनिक जरूरतों और **शोषण के उन्मूलन के लिए संघर्ष करने के लिए; मजदूर वर्ग की मुक्ति और पूँजीवादी बर्बरता से उसकी मुक्ति के लिए** संघर्ष को जारी रखना है।

हमारे अत्यावश्यक दायित्व

भाईयो और बहनों; मजदूर, कर्मचारी और बेरोजगार, सेवानिवृत्त, अप्रवासी और शरणार्थी, युवा वैज्ञानिक, स्वदेशी लोग, महिलाएं और पुरुश, जिन जटिल कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं, उनके सामने हमें एक बार फिर संघर्ष के मोर्चे पर खड़े होना होगा, जिससे लड़ने की हमारी क्षमता का संयोजन होगा। तत्काल और तुरन्त ही इन अनुरोधों के साथ सामाजिक शोषण के उन्मूलन के लिए:

1. राज्यों और सरकारों को सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के समर्थन के लिए आवश्यक धनराशि आवंटित करनी चाहिए, ताकि मुफ्त, पूर्ण और सभ्य स्वास्थ्य व्यवस्था सभी लोगों की पहुँच में हो।
2. सामरिक स्वास्थ्य क्षेत्र में निजीकरण पर रोक लगे।
3. अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को शुभकामनाएं और विवरण रोकना चाहिए और अपने संस्थापक सिद्धांतों पर खरा उतरना चाहिए।
4. सभी के लिए सुरक्षित और मुफ्त टीकाकरण हो।
5. बर्खास्तगी को रोका जाये।
6. कर्मचारियों के वेतन, बीमा और रोजगार के सभी अधिकारों का सम्मान हो।
7. लोकतांत्रिक और ट्रेड यूनियन स्वतंत्रता की रक्षा करना।
8. हड़ताल करने के अधिकार का बचाव।
9. मजदूरों और जनता के बीच अंतर्राष्ट्रीयता और एकजुटता को मजबूत करना।
10. सट्टेबाजियों और उच्च कीमतों को रोकें।
11. नस्लवाद और नव–फासीवाद को परास्त करना।

प्रिय साथियों,

डब्ल्यू.एफ.टी.यू. के 75 वर्षों का सम्मान करते हुए, आइए हम अपने वर्ग संघर्षों को मजबूत करें, हमारे नारे को व्यवहार में लाऐं: ''कोई भी अकेला नहीं होना चाहिए!'' सभी मजदूर, एक साथ, हम अपनी आधुनिक आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए संघर्ष कर सकते हैं।

डब्ल्यू.एफ.टी.यू. 75 वर्षों से सबसे आगे है और आज भी है। इसे जारी रखना हमारा कर्तव्य है और हम ऐसा ही करेंगे।

सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयवाद जिन्दाबाद!

मई दिवस अमर रहे!

संघर्ष को जारी रखना है!

केन्द्रीय ट्रेड यूनियनें

मई दिवस 2020 मनाने का संयुक्त आह्वान

{9 केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों– इंटक, एटक, एचएमएस, सीटू, एआईयूटीयूसी, टीयूसीसी, एआईसीसीटीयू, एलपीएफ और यूटीयूसी – ने इस कोरोना महामारी के चलते लॉकडाऊन की स्थिति में मई दिवस 2020 का मनाने का संयुक्त आह्वान केया है। इस आह्वान को पर्चों के माध्यम से सभी मजदूरों तक पहुँचाना है।}

कामरेडो, दोस्तो, भाईयो और बहनो,

मई दिवस की बधाई!

आज कामकाजी जनता बहुत गंभीर हमलों का सामना कर रही है।

कोविद–19 को एक बहाने के रूप में उपयोग करते हुए, नियोक्ता और सरकारें हमें 134 साल पहले के उन दिनों में पीछे धकेलना चाहते हैं, जब शिकागो के शहीदों ने 8 घंटे कार्य दिवस के लिए लड़ते हुए अपने प्राणों का बलिदान दिया था। केंद्र की भाजपा सरकार कथित तौर पर 12 घंटे के कार्य दिवस को वैध बनाने के उपाय कर रही है। गुजरात और मध्य प्रदेश में भाजपा की सरकारें पहले ही इस आशय की अधिसूचना जारी कर चुकी हैं।

केंद्र की भाजपा सरकार भी कार्यकारी आदेश या अध्यादेश के माध्यम से श्रमिक कानून संहिताकरण की प्रक्रिया को पूरा करना चाहती है ताकि मजदूर वर्ग के संगठित होने और हड़ताल करने के मूल अधिकारों पर हमला किया जा सके। गुजरात चौंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री ने माँग की है कि ट्रेड यूनियनों को कम से कम एक साल के लिए प्रतिबंधित किया जाना चाहिए और ठेका मजदूरों के वेतन को कम करके, मनरेगा श्रमिकों के स्तर पर रु० 202 प्रतिदिन करना चाहिए। सरकार और उसके आका, बड़े उद्योगपति जाहिर तौर पर चाहते हैं कि मजदूरों की परिस्थितियों को गुलामों की तरह का बना दिया जाए। गृह मंत्रालय के दिनांक 19.04.2020 के आदेश जो प्रवासी मजदूरों को राज्य की सीमाओं से परे आवागमन को प्रतिबंधित करता है, लेकिन जिस राज्य में लॉकडाउन हुए हैं उस राज्य के भीतर सभी जिलों में इसकी इजाजत देता है, यह मानव अधिकारों का घोर उल्लंघन है। धीमी गति से गिरती अर्थव्यवस्था जो कोरोना और लॉकडाउन के चलते और अधिक गिर रही है, को पुनर्जीवित करने की दलील पर मेहनतकश जनता के अधिकारों पर कई और हमले भी किए जाने वाले हैं।

अत्यधिक अमीरों से वित्तीय संसाधन जुटाने के बजाय, सरकार मजदूरों और आम जनता पर पूरा बोझ डाल रही है। यह घोषणा की गयी है कि कैबिनेट द्वारा अनुमोदित केंद्र सरकार के कर्मचारियों और पेंशनरों के लिए डीए/डीआर की वृद्धि का भुगतान जुलाई 2021 तक नहीं किया जाएगा। कई राज्य सरकारें कर्मचारियों के साथ परामर्श के बिना एकतरफा वेतन कटौती कर रही हैं। सरकार के सभी निर्देशों और दिशानिर्देशों के बावजूद, हजारों उद्यम, निजी और सार्वजनिक दोनों, और यहाँ तक कि सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम भी ठेका/कैजुअल मजदूरों की छंटनी कर रहे हैं और उनके वेतन में कटौती कर रहे हैं।

मजदूर वर्ग अपनी आजीविका और काम की परिस्थितियों पर ऐसे हमलों को स्वीकार नहीं कर सकता है।

सरकार कोविद–19 के कारण वित्तीय संकट का सामना करने का दावा करती है। तथ्य यह है कि सरकार ने कॉरपोरेट्स को कर रियायतें देकर और लाभ कमाने वाले सार्वजनिक उपक्रमों की बिक्री, पीएसयू बैंकों के एनपीए की वसूली न करके आदि के द्वारा बहुत पहले ही अपने खजाने को खाली कर दिया था। अब सरकार एक साल के लिए हर महीने एक दिन के वेतन को पीएम केयर फंड में योगदान करने के लिए अपने कर्मचारियों के बाजू मरोड़ रही है! लेकिन पहले से मौजूद वैश्विक संकट और आर्थिक मंदी, फिर कोविद–19 और फिर अनियोजित एवं अपर्याप्त तैयारी के साथ देशव्यापी तालाबंदी के कारण मजदूर पहले से ही तिहरी मार झेल रहे हैं। मजदूरों और कर्मचारियों के बड़े हिस्से, जिनमें फ्रंट लाइन स्वास्थ्य कार्यकर्ता भी शामिल हैं, लगभग 24 घंटे काम कर रहे हैं, जो दूसरों के जीवन को बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल रहे हैं। प्रवासी मजदूरों और असंगठित क्षेत्र के मजदूरों सहित बड़ी संख्या में लोग कोरोना का खामियाजा भुगत रहे हैं और नौकरी का नुकसान, कमाई का नुकसान, यहाँ तक कि आश्रयों के नुकसान

के साथ–साथ अपने परिजनों के साथ खुले आसमान के नीचे भूखे मर रहे हैं। लेकिन इन मजदूरों, जो हमारे देश की धन–संपत्ति तैयार करते हैं, जो आज भूखे रहने के लिए मजबूर हो गए हैं और बेघर हो गए हैं, को कोई राहत प्रदान करने के बजाय सरकार बड़े कॉरपोरेट्स और व्यवसायों को रियायतें और प्रोत्साहन दे रही है। जबकि अत्यधिक अमीरों पर एक मामूली सा धन कर लगाकर आवश्यक संसाधन जुटाना संभव है।

हर साल, हमारे सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 73% को शीर्ष 1% के द्वारा हडप लिया जाता है। आज हमारे देश के सर्वाधिक अमीरों के 1% की संपत्ति हमारे सबसे कमजोर लोगों के 70% की कुल संपत्ति के 4 गुना से भी ज्यादा है। 63 भारतीय अरबपतियों की संयुक्त कुल संपत्ति वित्त वर्ष 2018–19 के लिए भारत के कुल केंद्रीय बजट से अधिक है जो 24,42,200 करोड़ रुपये थी। हमारे देष में 953 अरबपतियों के परिवारों के पास औसतन 5,278 करोड़ रुपये की संपत्ति है। भाजपा सरकार ने 2016–17 के केंद्रीय बजट में धन कर को समाप्त कर दिया। इन सुपर अमीरों पर एक छोटा सा धन कर आसानी से सरकार को लगभग 50 करोड़ मजदूरों और मेहनतकश जनता के अन्य तबकों को राहत प्रदान करने के लिए आवश्यक व्यय को पूरा करने में सक्षम बना देगा।

लेकिन सरकार ऐसा करने के लिए तैयार नहीं है। इसके बजाय, अपने पहले से मौजूद जन–विरोधी सुधारों के एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए वह कोविद–19 को एक अवसर के रूप में लेना चाहती है, ताकि इसके कॉरपोरेट आका गरीब मजदूरों और मेहनतकश जनता का खून चूसकर अपनी संपत्ति बढ़ा सकें।

चौंकाने वाली बात है कि सत्ताधारी पार्टी के जमीनी सैनिक, मुस्लिम समुदाय के खिलाफ साम्प्रदायिक घृणा के बीज बोने के लिए कोरोना महामारी का उपयोग कर रहें है साथ ही लॉकडाउन को लागू करने के नाम पर, असंतोष की आवाज एवं लोकतांत्रिक और संवैधानिक अधिकारों अतिरिक्त हमले का सामना करना पड़ रहा है।

मजदूर वर्ग इसकी अनुमति नहीं दे सकता।

- इस मई दिवस पर, मजदूर वर्ग की एकजुटता का अंतर्राष्ट्रीय दिवस, आइए हम भाजपा सरकार और इसके कॉरपोरेट आकाओं की इन चालों को विफल करने का संकल्प लें।
- ***इस मई दिवस पर, लॉकडाउन की स्थिति के बीच में, हमारे सदस्यों और कार्यकर्ताओं के हर घर और हर उस कार्यस्थल पर जो लॉकडाउन की अवधि में चालू है, पर अपने संबंधित संगठनों का झंडा उठाकर मई दिवस को मनाऐं, और शारीरिक दूरी बनाए रखने साथ ही सामाजिक एकजुटता और एकता पर जोर देना है।***

हम प्रतिज्ञा करते हैं

- कोरोना वायरस से लड़ने के लिए एकजुट रहें, सुरक्षित रहें और अपने स्वास्थ्य की रक्षा करें
- आठ घंटे के कार्य दिवस के अधिकार जिस पर हमला हो रहा है, की रक्षा के लिए लड़ने के लिए एकजुट हों
- केवल मजदूरों के अधिकारों को रोकने वाले एवं नियोक्ताओं के पक्ष में 44 श्रम कानूनों का विलय चार कोड में करने के खिलाफ लड़ने के लिए एकजुट हों
- मौजूदा सामाजिक सुरक्षा, व्यावसायिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य उपायों की रक्षा करने और उन्हें सार्वभौमिक कवरेज के लिए समावेषी बनाने के लिए लड़ने के लिए एकजुट हों।
- सरकारी एवं सार्वजनिक उपक्रमों का निजीकरण करके बहुराष्ट्रीय कंपनियों को सौंपने जैसे भारतीय रेलवे, रक्षा कारखानों, कोयला, पोर्ट एंड डॉक, एयर इंडिया, बैंक, एलआईसी, 76 पीएसयू आदि में 100% एफडीआई के खिलाफ लड़ने के लिए एकजुट हों,
- पूँजीपतियों और सरकारों के छल कपट और साजिशों और उनका प्रतिनिधित्व करने वाली सरकारें, जो वायरस द्वारा बढ़े हुए आर्थिक संकट के बोझ को पूरी तरह से कामगार वर्ग पर थोपने की कोशिशें कर रही है, से लड़ने के लिए एकजुट हों
- मजदूरों और मेहनतकष जनता द्वारा उत्पन्न बड़े कॉर्पोरेट्स के मुनाफे और धन की रक्षा करने के लिए, उन्हें उनकी मेहनत से मिले अधिकारों से वंचित करने के, पूंजीपतियों और उनका प्रतिनिधित्व करने वाली सरकारों के घ्रणित प्रयासों से लड़ने के लिए, एकजुट हों।

- मजदूर वर्ग की एकता और सभी मेहनतकशों की एकजुटता को बाधित करने और उन्हें धर्म, क्षेत्र, नस्ल, जाति, जातीयता और लिंग के आधार पर विभाजित करने के सभी प्रयासों को विफल करने की लड़ाई के वास्ते एकजुट हों।
- दुनिया के मजदूरों और जनता पर, अपना आधिपत्य स्थापित करने और अंर्तराष्ट्रीय वित्तीय पूँजी के आदेशों को थोपने के साम्राज्यवाद के हमलों से लड़ने और उसे हराने के लिए एकजुट हों।
- शोषणकारी पूंजीवादी व्यवस्था के खात्मे के लिए संघर्ष को एकजुट करने और नए शोषण मुक्त समाज, सामाजिक समाज में प्रवेश करने के लिए एकजुट हों

मई दिवस जिन्दाबाद!

मजदूर वर्ग की एकजुटता जिन्दाबाद!

मजदूर–किसान एकजुटता जिन्दाबाद!

समाजवाद जिन्दाबाद!

तुरंत सोशल मीडिया नेटवर्क/समूह तैयार करें

सभी स्तरों पर सदस्यों तक पहुंचने के लिएः सीटू

देश भर के 25,000 स्थानों पर 21 अप्रैल 2020 के विरोध कार्यक्रम की सफलता से अनुभव प्राप्त करते हुए; और मई दिवस 2020 के अवसर पर यथासंभव विस्तृत पैमाने पर और अधिक से अधिक स्थानों पर झंडा फहराने और षपथ लेने का कार्यक्रम निर्धारित किया है तथा

इन अभियानों में सोषल मीडिया के महत्व को रेखांकित किया;

सीटू, ने 26 अप्रैल को अपनी सभी कमेटियों को एक परिपत्र के द्वारा, सभी इकाइयों, फेडरेशनों और यूनियनों को विभिन्न स्तरों पर सोषल मीडिया नेटवर्क/समूह, व्हाट्सएप ग्रुप आदि बनाने के लिए कहा है – सीटू के राष्ट्रीय पदाधिकारी, जनरल कौंसिल सदस्यों; फेडरेशनों; और राज्यों में कमेटियों के पदाधिकारियों, कौसिलों के सदस्यों और यूनियनों के पदाधिकारियों, के साथ ही जमीनी स्तर के सभी कार्यकर्ताओं और उससे भी आगे तक पहुंचने के लिए प्रयास करना है।

21 अप्रैल, 2020

अखिल भारतीय विरोध दिवस

कोविद–19 से लड़ते हुए देशव्यापी लॉकडाउन के दौरान; प्रारंभिक रिपोर्ट के अनुसार, सीटू के आह्वान पर, देश भर के सभी राज्यों में 300 से अधिक जिलों में लगभग 25,000 स्थानों पर 2.5 लाख से अधिक मजदूरों ने 21 अप्रैल 2020 को अखिल भारतीय विरोध प्रदर्शन में भाग लिया।

सीटू के आह्वान का एआईकेएस, एआईएडब्ल्यूयू, एआईडब्लूए, डीवाईएफआई, एसएफआई, डीएसएमएम, आदिवासी अधिकार राष्ट्रीय मंच और विकलांगों के अधिकार राष्ट्रीय मंच सहित अन्य बड़े संगठनों द्वारा तुरंत समर्थन किया गया और कार्रवाई में शामिल हुए। मध्यम वर्ग के कर्मचारियों की कई यूनियनों ने और कुछ राज्यों में कुछ अन्य केंद्रीय ट्रेड यूनियनों की स्थानीय इकाइयों ने भी समर्थन किया और इसमें शामिल हुए।

इस दिन ठीक सुबह 10.30 बजे, लाखों मजदूर और अन्य मेहनतकश तबके अपने घरों के सामने, अपनी बालकनियों या छत के सबसे ऊपर, काम के स्थानों, मुख्य सड़कों और गलियों में खड़े थे; 10 मिनट के लिए हाथों में तख्तियां और झंडे के साथ, लॉकडाउन के नियमों के अनुसार शारीरिक दूरी बनाए रखकर, और अपनी माँगों के लिए आवाज उठाकर नारे लगाए।

कई स्थानों पर केवल एक व्यक्ति था जो अपने घर के सामने खड़ा था और हाथ से लिखा हुआ तख्ती पकड़े हुए था; कई स्थानों पर वे बच्चों सहित अपने परिवार के सदस्यों के साथ खड़े थे; और अभी भी कई स्थानों पर लोग सड़कों के किनारे और छोटे शहर/गाँव के केंद्रों पर, कार्यालयों के सामने छोटे और बड़े समूहों में एकत्र हुए। घर से दूर, उचित आश्रय और नियमित भोजन के बिना फँसे हुए प्रवासी मजदूर भी कागज के टुकड़ों पर अपनी माँगों के साथ खड़े थे।

विरोध दिवस कोयला खदानों, चाय बागानों, निर्माण स्थलों, स्टील पीएसयू की टाउनशिप में मनाया गया; मजदूरों की कॉलोनियां, उन जगहों पर जहाँ

बड़ी संख्या में असंगठित क्षेत्र के मजदूर रहते हैं, साथ ही साथ कारखानों और कार्यस्थलों पर भी जहाँ वे खुले में थे। सफाई कर्मचारी, आशा, आंगनवाड़ी कर्मचारी और अन्य हजारों स्थानों पर शामिल हुए। किसानों और खेत मजदूरों के साथ–साथ योजना मजदूरों ने गांवों में भाग लिया। कुछ स्थानों पर, स्थानीय अधिकारियों को ज्ञापन सौंपे गए।

देश भर में गूंजने वाला आम नारा था 'भाषण नहीं; राशन चाहिए'; 'वेतन चाहिए; आर्थिक सहायता चाहिए; (कोई भाषण नहीं; हमें भोजन दो, वेतन और वित्तीय सहायता दो)। यह नारा जंगल की आग की तरह पूरे देश में फैल गया।

कश्मीर से केरल, गुजरात से असम तक गूंजने वाले नारों ने जनता की भावनाओं और कार्रवाई के लिए उनके आग्रह का संकेत दिया। त्रिपुरा में, राज्य सरकार ने सीटू और मजदूरों को अहातों के भीतर से भी दिवस का आयोजन से रोका और एस्मा लागू कर दिया। सीटू त्रिपुरा राज्य समिति ने सरकारी अधिसूचना की कड़ी निंदा की और प्रधानमंत्री को पत्र लिखा।

सीटू के महाराष्ट्र राज्य महासचिव एम.एच. शेख; इसकी दिल्ली–एनसीआर राज्य समिति के उपाध्यक्ष गंगेश्वर को गौतमबुद्ध नगर में और कोलकाता में 8 कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया।

.....

21 अप्रैल, 2020 को यह विरोध प्रदर्शन क्यों

सरकार ने देशव्यापी लॉकडाउन को 3 मई 2020 तक बढ़ा दियां विस्तार की घोषणा करते हुए, प्रधान मंत्री ने जनता को सात सलाहें दी। लेकिन सरकार ने उन उपायों के बारे में एक भी वाक्य नहीं बोला जो उन लाखों मजदूरों को राहत देने का हो जो अपनी आय का एकमात्र स्रोत भी खो चुके हैं और अपने परिवारों के साथ भूख से मर रहे हैं। वे भोजन या पैसे के बिना अपने बुजुर्ग परिजनों की देखभाल करने के लिए, उनके भीड़ भरे घरों में 'सामाजिक दूरी' बनाए रखने, या बिना पानी के बार–बार अपने हाथों को धोने की प्रधानमंत्री की उदार सलाह का पालन करने की स्थिति में भी नहीं हैं। नौकरी करने वाले कर्मचारियों की छंटनी न करने और उनके वेतन में कटौती न करने के बारे में उनकी सलाह पर ध्यान देने के लिए तैयार नहीं हैं। मजदूरों के लिए ऐसे परोपकारी शब्दों की उपयोगिता क्या है?

यह मजदूरों, विशेष रूप से असंगठित मजदूरों, ठेका और कैजुअल मजदूरों, संगठित क्षेत्र में एनईईएम मजदूर, प्रशिक्षु, अप्रेन्टिस आदि हैं, निर्माण, ईंट भट्ठा आदि मजदूरों सहित प्रवासी मजदूर, सूक्ष्म और लघु उद्यमों में मजूदर, घरेलू कामगार, छोटे किसान और खेत मजदूरों आदि जो कोरोना वायरस महामारी के कारण लॉकडाउन का खामियाजा भुगत रहे हैं। पत्रकार, आईटी/आईटीईएस के कर्मचारी और संगठित क्षेत्र के स्थायी कर्मचारियों को भी नहीं बख्शा जा रहा है। हर दिन, न केवल निजी क्षेत्र में, संगठित और असंगठित, बल्कि सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों से लेकर कॉरपोरेट मीडिया हाउसों में भी श्रमिकों

की छंटनी, और वेतन में कटौती के मामले सामने आ रहे हैं। यह पहले से ही ऐसे मजदूर थे जो कोरोना वायरस से पहले भी मौजूद मंदी के कारण आर्थिक रूप से सबसे ज्यादा प्रभावित थे। देषव्यापी तालाबंदी के दूसरे चरण के दौरान भी, अधिकांश प्रवासी मजदूर अपने घरों से दूर, अलग–अलग स्थानों पर फँसे हुए हैं; वे नहीं जानते कि हर दिन के लिए उनका भोजन कहाँ से आएगा, आएगा भी या नहीं।

लगभग 200 लोग भुखमरी, थकावट और अन्य कारणों से मर गए हैं, जबकि अपने घरों तक पैदल पहुँचने की कोशिश कर रहे थे।

पूंजीपति वर्ग, बड़े कॉरपोरेट और व्यापारी लोग, अपने घरों में रहते हैं, नए व्यंजनों की कोशिश करते हैं और अपने परिवारों के साथ आनंद लेते हैं, जबकि करोड़ों मजदूर जो धन कमाते हैं, जो समाज के पहिये चलाते हैं, अपना काम खो चुके हैं; रहने के लिए कोई जगह नहीं है; और भूखे मर रहे हैं। जिनकी सेवा समाज के लिए अपरिहार्य है, उनके जीवन को जोखिम में डालते हुए, बिना किसी सुरक्षात्मक उपकरण के काम कर रहे हैं। कोविद–19 से डॉक्टर, नर्स और अन्य स्वास्थ्य कर्मचारी संक्रमित हो रहे हैं और यहाँ तक कि अस्पतालों को भी बंद करना पड़ रहा है। फ्रंटलाइन श्रमिकों और सफाई कर्मचारियों को मास्क भी प्रदान नहीं किए जाते हैं।

यह भी एक बड़ी चिंता का विषय है कि भारत के कई हिस्सों में गेहूँ, धान, मिर्च, दालें आदि खड़ी फसलें, फसल कटाई के लिए तैयार हैं, लेकिन तालाबंदी और प्रतिबंधों ने ऐसी स्थिति पैदा कर दी है कि फसल कटाई, परिवहन और विपणन पर अंकुश लगा है। फसल कटाई, लाभकारी मूल्य, खरीद या नई खेती की व्यवस्था आदि को सुनिश्चित करने के लिए कोई उपाय नहीं किए गए हैं। यहाँ तक कि मनरेगा में लंबित वेतन का भुगतान भी नहीं किया गया है।

परिवार के सभी सदस्यों के घर तक ही सीमित रहने के कारण, घर में महिलाओं का स्थान प्रतिबंधित हो गया है। उन पर काम का बोझ बढ़ गया है। महिलाओं के खिलाफ हिंसा में खतरनाक रूप से वृद्धि हुई है।

लेकिन सरकार के पास तालाबंदी के कारण करोड़ों आम लोगों को होने वाली इन गंभीर समस्याओं के समाधान के लिए न तो समय है और ना ही नीयत है।

प्रख्यात अर्थशास्त्रियों और बुद्धिजीवियों ने सुझाव दिया है और केंद्रीय ट्रेड यूनियनों और किसानों और खेत मजदूरों के राष्ट्रीय संगठनों ने माँग की है कि कम से कम जीडीपी के 5–6 प्रतिशत के राहत पैकेज की घोषणा की जाए ताकि पीड़ित लाखों मेहनतकश लोगों को राहत मिल सके और अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित किया जा सके।

सीटू, सरकार द्वारा जारी निर्देशों और दिशानिर्देशों के कार्यान्वयन के लिए वैधानिक उपायों की माँग कर रहा है कि मजदूरों की छंटनी नहीं होनी चाहिए और लॉकडाउन अवधि के दौरान उनके वेतन में कटौती नहीं की जानी चाहिए। माँग है कि मनरेगा कानून के तहत बेरोजगारी वेतन की धारा का उपयोग, खेत मजदूरों की मदद के लिए किया जाए; खेत मजदूरों के लिए काम और आय सुनिश्चित करने के लिए मनरेगा के तहत फसल कटाई और परिवहन कार्य को शामिल किया जाना चाहिए; शहरी क्षेत्रों में रोजगार गारन्टी अधिनियम का विस्तार करना; किसान और खेत मजदूरों को बचाने के लिए और देश को खाद्य सुरक्षा सुनिष्चित करने के लिए खड़ी फसलों की रक्षा की जाए।

प्रधानमंत्री के पास इनमें से किसी के भी सुनने के लिए कोई कान नहीं है।

इसके बजाय, सरकार लॉकडाउन का लाभ उठाना चाहती है, ताकि वह मजदूर विरोधी एजेंडे के साथ आगे बढ़ सके, जैसा कि मीडिया में बताया गया है। यह कथित रूप से काम के घंटे बढ़ाकर 12 घंटे करने के लिए कारखाना अधिनियम में संशोधन करने जा रही है। यह भी कथित तौर पर तीन लेबर कोड को लागू करने के लिए आगे बढ़ रही है जैसा कि श्रम पर संसदीय स्थायी समिति ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की है। ये और कुछ भी नहीं हैं, बल्कि मजदूरों को गुलामी की परिस्थितियों में धकेलने और अपने कॉरपोरेट आकाओं की सेवा करने के उपाय हैं, जो स्पश्ट रूप से अपने मुनाफे की रक्षा के लिए इनकी समान माँग करते हैं। सीआईआई ने अनुमान लगाया है कि कोरोना वायरस की महामारी के कारण उनके मुनाफों में लगभग 10% की कमी आएगी। (ध्यान दें कि मुनाफे का सफाया होने वाला नहीं है।) वे अपने मुनाफों में 10% की कमी को सहन करने के लिए भी तैयार

नहीं हैं। लेकिन वे उन मजदूरों पर पूरा बोझ डालना चाहते हैं जो पहले से ही प्रभाव अपनी आजीविका, जीवन खो रहे हैं और आश्रयहीन हैं और भूख से मर रहे हैं। यह पूँजीवाद का नंगा स्वरुप है।

मजदूर वर्ग, जो पहले से ही आर्थिक मंदी और कोरोना वायरस की दोहरी मार झेल रहा है, इस बोझ को उठाने के लिए तैयार नहीं है। यह सरकार और प्रधानमंत्री की धोखेबाज मनोदशा को बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं है, जिसमें मजदूरों और आम जनता के लिए केवल शब्द हैं, लेकिन पूँजीपतियों, बड़े कॉरपोरेट्स और व्यापारी वर्ग के लिए धन के बोरे हैं।

वित्त मंत्री द्वारा घोषित वित्तीय पैकेज भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का केवल 0.85% है। जब से लॉकडाउन लागू किया गया, तब से सीटू, प्रधानमंत्री से सभी गैर–करदाताओं के घरों के जन धन खाते के माध्यम से प्रति माह 7,500 रुपये का प्रत्यक्ष बैंक हस्तांतरण सुनिश्चित करने की माँग कर रहा है, ताकि सभी असंगठित और प्रवासी मजदूरों और सभी जरूरतमंद लोगों के पास राशन कार्ड या आधार कार्ड के होने अथवा न होने के बावजूद भी मुफ्त राशन प्रदान किया जा सके। स्वास्थ्य ढांचे को मजबूत करने के लिए, आशा, आंगनवाड़ी कर्मचारियों, स्वच्छता कर्मचारियों सहित सभी फ्रंट लाइन स्वास्थ्य कामगारों को व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण प्रदान करने और एमएसएमईयों को आर्थिक मदद करके उन्हें सक्षम बनाने के लिए कि वे अपने मजदूरों के वेतन का भुगतान करें। सीटू ने माँग की है कि जीडीपी के कम से कम 5%–6% वाले वित्तीय पैकेज की घोषणा सरकार द्वारा की जानी चाहिए।

लोगों ने बर्तनों और थालियों को पीटा है। उन्होंने बत्तियाँ बंद कर दीं और मोमबत्तियाँ जलाई और दीये जलाये क्योंकि प्रधान मंत्री ने उन्हें ऐसा करने के लिए कहा। वह समय था जब जनता ने प्रधानमंत्री की आवाज सुनी थी। अब लॉकडाउन के कारण उत्पन्न तमाम तंगहालियों के दौर में जनता को एकजुट होकर अपनी आवाज बुलंद करने का समय है। जनता की प्रतिक्रिया से साबित हुआ कि यह वही था जिसका वे इंतजार कर रहे थे।

– के. हेमलता

शोक संदेश

कॉमरेड पीजूष नाग

लम्बी बीमारी के बाद 17 अप्रैल 2020 को तड़के सीटू के त्रिपुरा राज्य कमेटी के कार्यकारी अध्यक्ष कामरेड पीयूष नाग के निधन पर सीटू को गहरा दुख हुआ है। वह 84 वर्ष के थे।

कोलकाता में अपनी पढ़ाई खत्म करने के बाद, उन्होंने इंडियन एयरलाइंस में एक कामगार के रूप में शुरुआत की और बाद में उन्होंने कम उम्र में ही एक मेडीकल रिप्रेन्टेटिव का पेशा अपना लिया।

कॉमरेड पीयूष नाग 1970 से ही पिछले पाँच दशकों से ट्रेड यूनियन आंदोलन से जुड़े हुए थे। 1974 में वे पश्चिम बंगाल से त्रिपुरा आ गए। सीटू आयोजक के रूप में, उन्होंने त्रिपुरा में संगठित और असंगठित दोनों क्षेत्रों में आतंक और दमन का सामना करते हुए, मजदूरों को ट्रेड यूनियनों में संगठित करने में अग्रिम पंक्ति की भूमिका निभाई। वह एक दशक से अधिक समय तक सीटू की त्रिपुरा राज्य कमेटी के महासचिव रहे। वह जनवरी 2020 में आयोजित सीटू 16वें सम्मेलन तक दशकों तक सीटू की राष्ट्रीय कार्यसमिति के सदस्य भी रहे।

त्रिपुरा के मजदूर वर्ग के आंदोलन के एक दिग्गज कामरेड पीयूष नाग के निधन से, विशेष रूप से मजदूर वर्ग के आंदोलन और सीटू को बहुत नुकसान हुआ है।

सीटू दिवंगत नेता को श्रद्धांजलि देता है और उनके साथियों एवं शोक संतप्त परिजनों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

कोविद –19 के खिलाफ लॉकडाउन के दौरान

देश भर में सीटू का राहत कार्य

के. हेमलता

लॉकडाउन घोषित तीन सप्ताह में से, भारत के पहले एक सप्ताह में, एक बार फिर से देश के गरीब मजदूरों के प्रति भाजपा की मोदीनीत सरकार ने उदासीन और निष्ठुर रवैये को प्रदर्शित किया है। लॉकडाउन की अचानक घोषणा ने जनता को खुद को लॉकडाउन के लिए तैयार करने के लिए मुश्किल से कुछ ही घंटे का समय दिया और सरकार ने जनता विशेष रूप से गरीब असंगठित और प्रवासी मजदूरों के कष्टों को कम करने के लिए आवश्यक तैयारी के बिना ही बहुत राज्यों की जनता को अव्यवस्थित किया।

दैनिक वेतन भोगी, प्रवासी कामगार, छोटे भोजनालयों में काम करने वाले, होटल, दुकानों और ऐसे अन्य प्रतिष्ठानों, स्ट्रीट वेंडर्स और ऐसे कई अन्य लोगों को बदहाली में छोड़ दिया गया। अचानक उन्होंने पाया कि उनके पास कोई काम नहीं था, इसलिए कोई आय नहीं थी और इसलिए कोई भोजन भी नहीं था।

लॉकडाउन की घोषणा के तुरन्त बाद, सीटू ने स्वतंत्र रूप से और साथ ही अन्य केंद्रीय ट्रेड यूनियनों के साथ मिलकर प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर विशेषकर ठेका/कैजुअल/निश्चित अवधि के मजदूरों के लिए विभिन्न प्रतिष्ठानों में, विशेष तौर पर निजी क्षेत्र में छंटनी, वेतन में कटौती, जबरन बिना–भुगतान के अवकाश आदि पर जारी प्रतिबंधों को लागू करने के लिए 'वैधानिक रूप से लागू करने योग्य मजबूत उपायों' की तत्काल घोषणा की माँग की। केंद्रीय ट्रेड यूनियनों ने यह भी कहा है कि 'सरकार द्वारा या श्रम मंत्रालय द्वारा महज सलाह लॉकडाउन के दौरान रोजगार और कमाई के नुकसान को रोकने के लिए काम नहीं कर रही है'।

लॉकडाउन के दूसरे दिन ही केंद्रीय ट्रेड यूनियनों ने सरकार को चेतावनी दी थी कि *जब तक इन मुद्दों से निपटने के लिए सबसे कमजोर 40 करोड़ अनौपचारिक क्षेत्र के मजदूरों के लिए एक ठोस पैकेज 'आय/आजीविका के समर्थन'* की घोषणा नहीं की जाती है *'मेहनतकश जनता के बीच कोई काम नहीं और भोजन नहीं की चिन्ता नहीं कोविद–19 महामारी से निपटने में समस्याएं पैदा करेगा।'*

एमएसएमई, छोटे खुदरा व्यापारियों, सड़क विक्रेताओं/स्वरोजगार के लिए रियायत और ऋण भुगतान के स्थगन की माँग को भी केंद्रीय ट्रेड यूनियनों द्वारा उठाया गया था। केंद्रीय ट्रेड यूनियनों ने अनुमान लगाया कि कोरोना महामारी से संबंधित तात्कालिक चिंताओं को दूर करने के लिए पैकेज की लागत 5–7 लाख करोड़ रुपये से कम नहीं होगी, जो कि बड़े कॉरपोरेटस् को सरकार द्वारा दिए गए कर एवं 'निवेश प्रोत्साहन' जो आने वाला नहीं है, के लिए अन्य छूटों से कम ही है। उन्होंने इस बात पर आक्रोश व्यक्त किया कि वित्त मंत्री की अध्यक्षता वाली सरकार के आर्थिक कार्यबल ने आईटी रिटर्न, जीएसटी, टीडीएस के बारे में समय सीमा समाप्त करने या दिवालियापन अधिनियम आदि के तहत मामलों में विस्तार की घोषणा की, जो मुख्य रूप से बड़े व्यवसायियों के बीच बकायेदारों को ही फायदा पहुँचाते हैं लेकिन देश के मेहनतकशों को कोई राहत प्रदान करने पर पूरी तरह से चुप हैं। वित्त मंत्री ने 1.7 लाख करोड़ रुपये के पैकेज की घोषणा की, जो बेहद अपर्याप्त है। कुछ दिन पहले, सरकार ने ईपीएफ, पीपीएफ, वरिष्ठ नागरिक बचत योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, एनएससी आदि जैसे छोटी बचतों और सामाजिक सुरक्षा साधनों पर ब्याज दर में भारी कटौती की घोषणा की, जो वरिष्ठ नागरिकों और आम जनता को कड़ी चोट दे रही है।

कोविद–19 के खिलाफ देशव्यापी लॉकडाउन के तुरन्त बाद सीटू ने असंगठित क्षेत्र के मजदूरों, विशेष रूप से प्रवासी श्रमिकों को हर संभव मदद देने के लिए अपनी सभी कमेटियों को परिपत्र जारी किया। इसमें अपनी कमेटियों और सदस्यों को यह सुनिश्चित करने के लिए भी कहा कि घरेलू कामगार जो लॉकडाउन के कारण अपने काम पर नहीं जा सकते हैं, उनकी वेतन में कटौती न की गयी है।

पूरे देश में मजदूर वर्ग, जिसमें वे राज्य भी शामिल हैं जहाँ सीटू और ट्रेड यूनियन आंदोलन खुद मजबूत नहीं हैं, ने संकट में अपने भाइयों, विशेष रूप से प्रवासी मजदूरों का समर्थन करने के लिए शानदार ढंग से प्रतिक्रिया दी। लगभग सभी राज्यों में सीटू कमेटियों, राज्य, जिला से लेकर निचले स्तर के कैडरों ने गंभीरता से जवाब दिया। देश भर में जो प्रमुख समस्याएं थीं, वे थीं नौकरी की हानि, आय का नुकसान, और मकान मालिकों द्वारा बेदखली के कारण आश्रय की हानि, और भोजन एवं अन्य रोजमर्रा की आवश्यक वस्तुओं की कमी। सीटू कमेटियां इन सभी पहलुओं में मजदूरों की मदद करने की पूरी कोशिश कर रही हैं।

दिल्ली एनसीआर क्षेत्र में जहाँ हजारों लोग फंसे हुए हैं, कई प्रवासी मजदूरों को भोजन के पैकेट/राशन की आपूर्ति की जा रही है। सीटू दिल्ली–एनसीआर राज्य कमेटी ने मदद के अनुरोधों को पूरा करने के लिए एक फण्ड का आह्वान किया। यह एक सप्ताह के लिए पाँच लोगों के परिवार के लिए भोजन की टोकरी और आवश्यक वस्तुओं के साथ प्रदान कर रहा है, जिसकी कीमत 1200 रुपये है। आह्वान पर अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है। पश्चिम बंगाल, जम्मू और कश्मीर आदि के हजारों प्रवासी कामगारों को खाद्य और आवश्यक वस्तुएं पहले ही वितरित की जा चुकी हैं। तीन स्थानों पर, कुछ के लिए सामुदायिक रसोई भी चलाई जा रही हैं।

महाराष्ट्र में, पश्चिम मुंबई, नासिक, सोलापुर, नागपुर आदि में सीटू कमेटियों ने विभिन्न स्थानों में हजारों प्रवासी निर्माण मजदूरों को भोजन किट और भोजन पैकेट प्रदान किए। वेंडर्स की यूनियन ने भोजन तैयार करने में सब्जियों का योगदान दिया। मुंबई नगर निगम ने परिवहन प्रदान करके इस प्रयास में मदद की। अन्य जिलों में भी इसका विस्तार किया जा रहा है।

कर्नाटक में, सीटू की राज्य कमेटी ने बैंगलोर और आसपास के क्षेत्रों में असंगठित क्षेत्र के प्रवासी मजदूरों के लिए एक सप्ताह के लिए लगभग 10,000 भोजन किटों को व्यवस्थित करने के लिए पहल की है, प्रत्येक किट में कुछ आवश्यक भोजन और अन्य आइटम हैं जिनकी लागत प्रत्येक रु० 800 है। कमेटी को धन के लिए अपने आह्वान पर बहुत अच्छी प्रतिक्रिया मिली और दो दिनों के भीतर 2,000 खाद्य किट वितरित करने के लिए तैयार था। अन्य जिलों में भी राहत के प्रयास जारी हैं।

गुजरात में, भावनगर जिला कमेटी ने 1053 व्यक्तियों को कवर करने वाले प्रवासी मजदूरों के एक हिस्से को एक सप्ताह का राशन वितरित किया। कुछ स्थानों पर सीटू कमेटियों ने भोजन उपलब्ध कराने में गुरुद्वारों और गैर सरकारी संगठनों की मदद ली। राज्य में सीटू ने बिहार के लगभग 60 प्रवासी कामगारों की मदद की, जिन्होंने सूरत में अपना काम खो दिया था और उनके पास कोई भोजन व्यवस्था नहीं थी। उत्तर प्रदेश के लखनऊ में, सीटू कमेटी ने निर्माण मजदूरों के दस परिवारों को 10 किलो चावल, 3 किलो दाल और 1 किलो नमक प्रदान किया। कानपुर, सहारनपुर, इलाहाबाद और अन्य जिला कमेटियां, अपने सीमित संसाधनों के साथ, जरूरतमंद असंगठित क्षेत्र के मजदूरों को आवश्यक खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराने के लिए भी प्रयास कर रही हैं।

सीटू की जम्मू और कश्मीर राज्य कमेटी प्रवासी के साथ–साथ रेलवे लोडिंग और अनलोडिंग, बीएसएफ संगठन और विभिन्न कारखानों में काम करने वाले स्थानीय ठेका मजदूरों के साथ भी लगातार संपर्क में है। उन्होंने मजदूरों को वेतन भुगतान से संबंधित सरकारी दिशा–निर्देश, लॉकडाउन की अवधि के दौरान नौकरी की सुरक्षा आदि के बारे में सूचित किया है और जहाँ भी वे लागू नहीं किए जा रहे थे, अधिकारियों के समक्ष प्रतिनिधित्व किया है। उन्होंने ठेका मजदूरों को खाद्य सामग्री की आपूर्ति करने के लिए ठेकेदारों पर भी दबाव डाला है।

असम में, सीटू ने एसएफआई के साथ मिलकर केरल और तमिलनाडु में काम करने वाले असम और पश्चिम बंगाल के मजदूरों की एक समूह हेल्पलाइन बनाई, ताकि वे केरल और तमिलनाडु सीटू कमेटियों के साथ समन्वय में मदद कर सकें। बिहार में, बैंक कर्मचारियों ने हजारों मजदूरों को भोजन वितरित किया।

हरियाणा में, सीटू जिला कमेटियां प्रवासी मजदूरों का सर्वेक्षण कर रही हैं, उन्हें पंजीकृत कर रही हैं और स्थानीय जनता, प्रशासन और गैर सरकारी संगठनों की मदद से सहायता प्रदान कर रही हैं। यूपी के प्रवासी मजदूरों के एक समूह को कैथल जिले में एक सप्ताह के राशन की आपूर्ति की गयी। गुड़गांव में फंसे पश्चिम बंगाल और अन्य राज्यों के सैकड़ों मजदूरों को भोजन उपलब्ध कराया गया। इसी तरह की पहल फरीदाबाद और अन्य जिलों में भी की जा रही है।

केरल में, राज्य में प्रवासी मजदूरों जिन्हें राज्य में 'अतिथि श्रमिक' कहा जाता है, को भोजन देने और राहत देने के लिए अन्य जन संगठनों के साथ सीटू द्वारा पूरे राज्य में विस्तृत व्यवस्था की गई है। वे एलडीएफ सरकार द्वारा राज्य में सभी असंगठित क्षेत्र के मजदूरों और प्रवासी मजदूरों सहित सभी जरूरतमंद कामगारों को राहत प्रदान करने के लिए व्यापक उपायों के साथ समन्वय कर रहे हैं।

तेलंगाना के खम्मम में काम करने वाले उत्तर प्रदेश के प्रवासी ग्रेनाइट मजदूरों को सीटू की जिला कमेटी द्वारा खाद्य सामग्री दी गई थी। पश्चिम बंगाल के प्रवासी मजदूरों को हैदराबाद में विभिन्न स्थानों पर मदद दी गई। जिला कमेटियां उन क्षेत्रों का दौरा कर रही हैं जहाँ प्रवासी मजदूर अपनी समस्याओं का पता लगाने के लिए रह रहे हैं और उन्हें उठाने के लिए कार्रवाही की गयी, जिसमें श्रम विभाग को प्रतिवेदन दिये कि यह सुनिश्चित करने के लिए कि वेतन भुगतान के लिए सरकार के निर्देशों आदि को लागू किया जाये।

तमिलनाडु में, सीटू जिला कमेटियाँ विशेष रूप से चेन्नई और उसके आसपास के क्षेत्रों में झारखण्ड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल सहित विभिन्न राज्यों से प्रवासी मजदूरों की मदद करती रही हैं, और चेन्नई से पश्चिम बंगाल तक यात्रा करने वाले छात्रों को भोजन उपलब्ध कराने, सुविधा प्रदान करने और आवास प्रदान करने सहित विभिन्न तरीकों से मदद कर रही हैं। रोजगार जारी रखने, वेतन भुगतान आदि के बारे में नियोक्ताओं और श्रम विभाग से बात करना भी शामिल है।

पश्चिम बंगाल राज्य सीटू कमेटी, एसएफआई, डीवाईएफआई और अन्य जन संगठनों के साथ, लगभग सभी जिलों में प्रवासी मजदूरों सहित असंगठित क्षेत्र के मजदूरों को भोजन और सहायता प्रदान कर रही है। बूढ़े लोगों और महिलाओं को विशेष रूप से शारीरिक सहायता सहित सभी प्रकार की सहायता प्रदान करके और उनकी दैनिक जरूरतों जैसे दवाइयों आदि की खरीद के द्वारा ध्यान रखा जा रहा है।

सीटू, अखिल भारतीय किसान सभा और अखिल भारतीय खेत मजदूर यूनियन ने मिलकर सामुदायिक रसोई खोलने और पूरे देश में कई जगहों पर जरूरतमंद कामगारों को भोजन वितरित करने की व्यवस्था करने का फैसला किया है।

सीटू की राज्य कमेटियाँ भी जरूरतमंद प्रवासी कामगारों की पहचान करने और उनकी मदद के लिए आपस में समन्वय कर रही हैं। कई राज्यों में सीटू कैडरों के अलावा सरकारों पर मजदूरों का पंजीकरण करने, प्रवासी मजदूरों के लिए राशन, खुले सामुदायिक रसोईघर, आश्रय आदि प्रदान करने के लिए भी दबाव डाला जा रहा है। वे परिवहन, सफाई आदि जैसी आवश्यक सेवाओं तक पहुँचने में मजदूरों और अन्य लोगों की मदद करने में लगे हुए हैं।

आशा वर्कर्स, एएनएम–2 और स्वास्थ्य सेवाओं में अन्य योजना मजदूर, आंगनवाड़ी कर्मचारी सहित योजना मजदूर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने, सर्वेक्षण करने आदि में लगे हुए हैं; सफाई, परिवहन, भोजन की आपूर्ति आदि जैसी अन्य आवश्यक सेवाओं में लगे कर्मचारी भी अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन कर रहे हैं। लेकिन अब तक इनमें से अधिकांश मजदूरों को न्यूनतम सुरक्षात्मक उपकरण भी प्रदान नहीं किए गए हैं।

सीटू कमेटीयां प्रवासी कामगारों को हर संभव तरीके से समर्थन देने का सबसे अच्छा प्रयास कर रही है, सरकारों द्वारा बनाई गयी अड़चनों सहित लॉकडाउन, कर्फ्यू आदि के कारण कई कठिनाइयों के बावजूद, खासकर भाजपा शासित राज्यों में सीटू कार्यकर्ताओं को कर्फ्यू पास जारी करने, धन और कैडरों के संदर्भ में संसाधनों की सीमा आदि के साथ जबकि मजदूरों और आम जनता द्वारा दिखाई गई एकजुटता की विशाल भावना और विभिन्न तरीकों से उनकी सहायता और मदद से वे इस महत्वपूर्ण कार्य को करने में सक्षम हैं।

इन गतिविधियों के साथ, सीटू सरकारों पर मजदूरों को पंजीकृत करने, राषन प्रदान करने और सामुदायिक रसोई घर खोलने आदि के लिए दबाव डाल रहा है, सीटू कमेटियाँ राशन, वित्तीय सहायता आदि के लिए विभिन्न सरकारों द्वारा की गई घोषणाओं को लागू करने के लिए भी सभी प्रयास कर रही हैं।

वे छंटनी, वेतन का भुगतान न करने आदि से भी जूझ रहे हैं। कई राज्यों में स्वास्थ्य और आवश्यक सेवाओं जैसे परिवहन, सफाई, खाद्य आपूर्ति आदि में लगे मजदूरों को बुनियादी सुरक्षा उपकरण भी नहीं दिए जाते हैं।

लेकिन सरकार के रवैये, भारत सरकार और कुछ राज्य सरकारों के जनता के लिए निराशाजनक हैं। प्रवासी मजदूरों को अपराधी माना जाता है। उन पर लाठीचार्ज किया जा रहा है और इस बहाने कि वे तालाबंदी के आदेश का उल्लंघन कर

रहे हैं, उन लोगों के खिलाफ मामले दर्ज किए जा रहे हैं जो आय और भोजन और आश्रय की कमी के कारण अपने मूल स्थानों तक पहुंचने के लिए सैकड़ों किलोमीटर पैदल चलने के लिए मजबूर थे। उत्तर प्रदेश में एक राजमार्ग पर प्रवासी मजदूरों के समूह पर स्वच्छता के कीटाणुनाशक का छिड़काव किया गया। हरियाणा में सरकार उन्हें जेलों में डालना चाहती है। सर्वाधिक क्रूर रवैया मोदीनीत भाजपा सरकार का है, जिसने गरीब मजदूरों के हालातों को बिल्कुल भी ध्यान में नहीं रखा और लॉकडाउन की घोषणा करने से पहले भोजन और आश्रय सुनिश्चित करने की कोई व्यवस्था नहीं की, उन्हें भुखमरी के लिए मजबूर किया और लाखों मजदूरों को अचानक बेघर बनाया। तेलंगाना राज्य सरकार ने सभी कर्मचारियों और पेंशनरों के वेतन में 50% कटौती करने का आदेश जारी किया है; यहाँ तक कि खराब भुगतान वाले आउटसोर्स और ठेका कर्मचारियों को भी नहीं बख्षा जाता है, उन्हें भी अपने वेतन में 10% की कमी से गुजरना पड़ता है। कटौती 'अगले आदेशों तक जारी रहेगी'।

सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, नवउदारवाद के तहत जनता के कल्याणकारी खर्च में भारी कटौती, एक दशक से अधिक समय से जारी संकट ने जैसा कि दुनिया के कई देशों में कोरोना वायरस की महामारी को भारत में और भी गंभीर बना दिया है। पिछले कई वर्षों के दौरान भारत में व्यापक रूप से प्रचारित अंधविश्वासों और अवैज्ञानिक सोच ने भी वैज्ञानिक सावधानियों के बारे में अनभिज्ञता प्रकट की है और कोरोना वायरस की रोकथाम और उपचार में गोमूत्र और गोबर के उपयोग जैसे अवैज्ञानिक विचारों का प्रसार किया है।

सरकार को अपने नवउदारवादी एजेंडे को छोड़ने और वैज्ञानिक सोच विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।

सीटू जनरल काउंसिल की बैठक स्थगित

50वें वर्ष समापन समारोह और

कामकाजी महिला कमेटी की बैठक स्थगित

25 अप्रैल 2020 को इसकी सभी इकाइयों को एक तत्काल संचार द्वारा; सीटू सेंटर ने बताया है कि कोलकाता में 31 मई – 2 जून 2020 को आयोजित होने वाली सीटू जनरल काउंसिल मीटिंग (जीसीएम) को कोरोना महामारी के कारण लॉकडाउन की निरंतरता के चलते हुई अनिश्चितता के कारण स्थगित कर दिया गया था।

तदनुसार, सीटू के स्वर्ण जयंती वर्ष समारोह का समापन जो 30 मई 2020 को कोलकाता में आयोजित किया जाना होना था; तथा

उसी दिन सुबह आयोजित होन वाली कामकाजी महिला समिति की जनरल काउंसिल की बैठक भी टल गई है।

सीटू की 50वीं वर्षगांठ के समापन समारोह और कामकाजी महिला समिति की बैठक के साथ–साथ जीसीएम की तारीखों का फैसला लॉकडाउन की स्थिति से बाहर निकलने के बाद किया जाएगा।

सीटू ने त्रिपुरा में एस्मा थोपने की निंदा की

12 अप्रैल 2020 को एक बयान में, सीटू ने कोविद–19 लॉकडाउन के दौरान त्रिपुरा में भाजपा सरकार द्वारा क्रूर ईएसएमए लगाने की निंदा की, जिसका उद्देश्य नर्सिंग स्टाफ और अन्य स्वास्थ्य कर्मचारियों को पीपीई जैसे सुरक्षा उपकरणों और पर्याप्त परीक्षण सुविधाएं प्रदान करने में सरकार की विफलता को कवर करना है; कोविद पीड़ितों के इलाज के लिए सरकारी अस्पतालों में; और असंगठित क्षेत्र के मजदूरों, आदिवासियों, दलितों और अन्य लोगों को राहत प्रदान करने में अत्यधिक अपर्याप्तता।

साथ ही साथ सीटू और अन्य जन संगठनों के नेतष्त्व में पीड़ित जनता द्वारा किसी भी विरोध को दबाने के लिए एस्मा लगाया गया। सीटू ने इसे तत्काल वापस लेने की माँग की है।

vk|kfxd Jfedk d fy, miHkkDrk eY; lpdk vk/kkj o"k 2001=100

u- 112@6@2006&,ulhihvkbl

jkT;	dsn	tuojh 2020	Qjojh 2020
vk/k izns'k	xq.Vwj	302	299
	fot;okM+k	306	304
	fo'kk[kkiÑ"ke	314	312
vle	MeMek frulf[k;k	301	298
	xqokgkVh	293	292
	ycd flYpj	282	279
	efj;kuh tkjgkV	277	274
	jqxkikjk rsti qj	264	261
fcgkj	esQ?kj&tekyiqj	366	358
p.Mhx<+	p.Mhx<+	325	323
NÑkhlx<+	fHkykbZ	342	337
fnYyh	fnYyh	314	311
Xkkok	xkok	345	340
Xkqtjkr	vgenkckn	295	292
	Hkkouxj	307	311
	jktdksV	3't2	310
	lwjr	285	279
	oMksnjk	290	289
gfj;k.kk	Qjhnkckn	292	289
	;equkuxj	315	314
fgekpy	fgekpy çns'k	282	280
tEew ,oa d'ehj	Jhuxj	301	299
>kj[k.M	ckdkjks	318	313
	fxfjMhg	366	359
	te'kniqj	381	378
	>fj;k	377	375
	dksMek	404	402
	jkph gfV;k	413	408
dukVd	cqyxke	322	320
	cqxyqM+	308	306
	gqcyh /kkjokM+	353	348
	ejdjk	320	319
	esyqj	327	326
dsjy	,.kkdqye@vyoZ	336	334
	esl.MkD;ke	334	332
	fDoykWu	376	374
e/; çns'k	Hkksiky	342	341
	fNUnokM+k	325	320
	bUnkSj	298	297
	tcyiqj	337	337

jkT;	dsn	tuojh 2020	Qjojh 2020
महाराष्ट्र	मुम्बई	322	319
	ukxiqj	406	405
	ukfld	380	377
	iq.k	362	360
	'kksykiqj	350	349
mMhlk	vkSjaxkckn&rkyqdk	349	346
	jkmjdsyk	335	333
ikfMpfj	ikfMpfj	332	329
iatkc	vejrlj	357	357
	tkyU/kj	337	335
	ywf/k;kuk	316	312
jktLFkku	vtesj	299	2ee
	HkhyokM+k	308	303
	t;iqj	326	324
rfeyukMq	pSUuS	292	289
	dksy;EcVwj	303	301
	dqUuwj	350	347
	enqjkbZ	321	319
	lsyye	310	306
	fr#fpjkiYyh	331	325
rsyaxkuk	xksnkojh[kkuh	348	345
	gSnjkckn	275	275
	okjaxy	332	330
f=iqjk	f=iqjk	278	272
mÑkj çns'k	vkxjk	382	377
	xkft;kckn	350	346
	dkuiqj	364	360
	y[kuÅ	362	357
	okjk.klh	358	353
if'pe cxky	vklulkSy	354	350
	nkftZfyax	287	284
	nqxkiqj	336	335
	gfYn;k	403	398
	gkoM+k	303	302
	tkyikbZxqM+h	291	289
	dksydkrk	296	296
	jkuhxat	313	312
	flyhxqM+h	299	296
vf[ky Hkkjrh; lpdk		330	328

सीटू का मुखपत्र

सीटू मजदूर

ग्राहक बनें

- **व्यक्तिगत ग्राहकों के लिए** – वार्षिक ग्राहक शुल्क – रू0 100/–
- **एजेंसी** – कम से कम पाँच प्रतियों; 25% छूट कमीशन के रूप में;
- **भुगतान** – चेक द्वारा – ''सीटू मजदूर'' जो कनारा बैंक, डीडीयू मार्ग शाखा, नई दिल्ली–110002 पर देय

  बैंक मनी ट्रांसफर द्वारा – एसबीए/सीन0 0158101019568; ~~आइएफसीकोड~~ : सीएनआरबी 0000158;
- **संपर्कः** ई मेल/पत्र की सूचना के साथ प्रबंधक, सीटू मजदूर, सीटू केन्द्र, बी टी आर भवन, 13 ए राऊज एवेन्यू, नई दिल्ली–110002; फोनः (011) 23221306 फैक्सः (011) 23221284

21 अप्रैल अखिल भारतीय विरोध

(रिपोर्ट पृ० 18)

असम

चाय बागान और कारखाने में

छत्तीसगढ़

खाली थाली बजाते और नारे लगाते हुए *'भाषण नहीं, राशन चाहिए'*

झारखण्ड

बोकारो, रांची और रामगढ़ में

Posted at NDPSO New Delhi- 1 Postal Regd. No. DL(C)-01/1201/18-2020 RNI No. 34666/79: 6th-7th of every month
Licensed to Post without prepayment under License No. U(C)-38/2018-20 (Date of Publication -05/05/2020)

21 अप्रैल अखिल भारतीय विरोध

केरल

पंजाब

तपन सेन द्वारा सेंटर ऑफ इण्डियन ट्रेड यूनियन्स के लिए मुद्रित और प्रकाशित तथा प्रोग्रैसिव प्रिंटर्स, ए–21 झिलमिल इण्डस्ट्रियल एरिया, शाहदरा, दिल्ली–95 से मुद्रित तथा बी टी रणदिवे भवन, 13–ए राउज एवेन्यू, नई दिल्ली–110002 से प्रकाशित (फोनः 23221288, 23221306; http://www.citucentre.org, CITU email: citu@bol.net.in, citubtr@gmail.com)
सम्पादक : **के हेमलता**